अक़ीदे की कहानी देवबंदी की ज़ुबानी

मुरत्तबा

अल्हाज मुहम्मद मुईन आज़मी

प्रकाशक

रज़वी किताब घर दिल्ली

तमाम भाईयो को सलाम किताबें

स्केन करके पीडिएफ में आप

तक पहुँचाने के लिए इस

फक़ीर को अपनी दुआओ में

खास तौर पर याद रखे।

दुआओ का तालीब

सग ए रज़ा लाला ख़ान

786 / 92

अक़ीदे की कहानी देवबंदी की जुबानी

मुरत्तब और पेशकश

अल्हाज मुहम्मद मुईन आज़मी
आरा, बलरामपुर, ज़िला सरगुजा (छत्तीसगढ़)

प्रकाशक
रज़वी किताब घर
423, उर्दू मार्किट, मटिया महल, जामा मस्जिद,
दिल्ली-110006 ★ Phone : 011 - 23264524

नाम किताब	:	अक़ीदे की कहानी देवबंदी की ज़ुबानी
लेखक	:	अल्हाज मुहम्मद मुईन आज़मी
बाएहतेमाम	:	हाफ़िज़ मुहम्मद क़मरुद्दीन रज़वी
प्रकाशक	:	रज़वी किताब घर, दिल्ली-6
नज़रेसानी और तक़रीज़	:	अल्लामा नूर आलम रिज़वी जामा मस्जिद, अम्बिकापुर, सरगुजा (छ०ग०)
कम्पोज़िंग	:	उमा इलेक्ट्रॉनिक्स इंस्ट्टीयूट, अंबिकापुर
सेटिंग	:	रज़वी कम्प्यूटर प्वाइंट, दिल्ली-6
सन् इशाअत	:	2012 ई०
पेज	:	48
तादाद	:	1100
क़ीमत	:	

मिलने के पते

रज़वी किताब घर
423, मटिया महल, जामा मस्जिद, दिल्ली-110006 फ़ोन: नं० : 011-23264524

मक्तबा इमामे आज़म
425, मटिया महल, जामा मस्जिद, दिल्ली-110006 मो० : 09958423551

रज़वी किताब घर
114, गैबी नगर, भिवंडी, ज़िला थाणा (महाराष्ट्र) फ़ोन: नं० 02522-220609

न्यू रज़वी किताब घर
वफ़ा कम्पलैक्स, गैबी पीर रोड, भिवंडी (महाराष्ट्र) मो० 09823625741

फ़ेहरिस्ते मज़ामीन

786 / 92

1. नज़रे सानी और तक़रीज

अल्हाज मास्टर मु. मोईनुद्दीन आज़मी साहब जो बहुत सारी किताबों के मुवल्लिफ़ व मुसन्निफ़ हैं और हर किताबो में माशाअल्लाह एक नये रंग में नज़र आते हैं। उन्हीं की तालीफ़ जदीद किताब "अक़ीदे की कहानी, देवबंदी की ज़बानी" मैने पढ़ा, पढ़कर ये महसूस हुआ कि आज़मी साहब उनके मुंह पर ऐसा ज़ोर दार तमांचा उन्हीं के हॉथो से लगाया है कि जिसकी टीस वह मुद्दतों तक महसूस करते रहेंगे। सच है ज़बान, वह किरदार अदा नहीं करती जो किरदार नोके क़लम से सजाई हुई तहरीर अदा करती है। क़लम की अहमियत हर दौर, हर लमहा, हर वक़्त में रही है। बरेली शरीफ़ का वह क़लम ही तो था जिसने नज़्दीयत को उन्ही के शीश महल में नंगा करके छोड़ा।

कल्क रजा है ख़ंजरे ख़ूँ बार बरक बार,
आदाये से कहदो ख़ैर मनायें न शर करें।

नज्दी मक्तबा फ़िक्र के सोंचने, बोलने और लिखने का अंदाज़ ही निराला है। ये सोचते है तो नबी के खिलाफ़, बोलते हैं तो नबी के खिलाफ़, इज्तमा करते है तो नबी के खिलाफ़, मगर हैरत सीना कोबी करती हुई नज़र आती है के जो चीज़ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की शाने अक्दस में इस्तमाल कुफ़्र हो जाये वही चीज़, वही अक़ीदा अपने नाम निहादमुल्लाओं के लिये साबित करें, मगर ईमान का दामन भी हॉथ से न छूटे। वाह रे! नज्दीयों की पीर परस्ती।

अल्लाह रे ख़ुद साख़्ता क़ानून का नये रंग।
जो बात कहें फ़ख़्र वही बात कहें नंग।।

ये मेरी ज़बान की लफ़्फ़ाजी नहीं बल्कि अमर वाक़ेए है, कोई अफ़साना नहीं। नाक़ाबिले इन्कार हक़ीक़त है और अगर यक़ीन नहीं हो तो तक़्वीयतुल ईमान सफ़ा 34 मक्तबा रहीमिया देवबंद उठाकर देखें। उनके पेशवा ने लिखा है– "जिसका नाम मुहम्मद या अली हो वह किसी चीज़ का मालिक व मुख़्तार नहीं" इस ख़त कशीदा अल्फ़ाज़ को आप बार – बार पढ़ें और देखें के अपने माथे को कलंक के टीके से

सजाने वाली क़ौम अपने नबी के मुतल्लिक कैसा अक़ीदा रखती है। इन तौहीन आमेज़ जुमलों से क्या ये चन्द बातें उभर कर सामने नहीं आती:–

(1) क्या साहेबे तक़्वीयतुल ईमान अल्लाह व रसूल से लड़ाई नहीं ले रहे हैं?

(2) क्या अल्लाह उसके रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सरीह तौहीन नहीं कर रहे हैं?

(3) क्या उन्होंने जनाब मुहम्मदुर्रसूल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को मजबूर व बेकस, बा–अख़्तियार को बे–अख़्तियार नहीं बनाया?

(4) क्या उन्होंने तक़्वीयतुल ईमान के हर क़ारी के ज़ेहन व फ़िक्र को परागन्दा और खुश अक़ीदा सुन्नी मुसलमानों की दिल आज़ारी नहीं की?

अब आइये तस्वीर का दूसरा रूख़ मुलाहिज़ा फरमायें – कि जब इन दरीदां– देहनों ने अपने बुज़ुर्गों की मदहत सराई के लिये काग़ज और क़लम संभाला तो उन्हें सफ़े अंबिया से भी आगे पहुँचा दिया। वे लिखते हैं :–

मुर्दों को जिंदा किया जिंदों को मरने न दिया,
इस मसीहाई को देखें ज़री इब्न मरियम।

(मर्सिया रसीद अहम गंगोही)

इस शेर को पढ़ने के बाद आप सच्चे दिल के साथ बतायें के इससे ये चन्द बातें साबित नहीं होतीं –

(1) रशीद अहमद गंगोही साहब मुर्दों को जिंदा करते हैं।

(2) गंगोही साहब जिंदा को मरने नहीं देते। (ये अलग बात है कि मरकर खुद ही वासिले ज़हन्नम हो गये।)

(3) गंगोही साहब मुर्दों को जिंदा करने में इतनी हद तक तजाविज़ कर गये कि हज़रत ईसा अलै. को पीछे छोड़ दिया।

(4) गंगोही साहब इतने बाअख़्तियार हैं के मौत व हयात उनकी मुठ्ठी में है और मुहम्मद व अली नाम रखने वाले हज़रात नाऊज़ुबिल्लाह किसी चीज़ के मालिक व मुख़्तार नहीं।

(5) मर्शिया रशीद अहमद गंगोही में, गंगोही साहब हज़रत ईसा अलै. को दावत दे रहे हैं के वह आयें और मेरी मसीहाई को देखें।

अब मैं संजीदा मिजाज़ मुसलमानों को आवाज़ देता हूँ कि अगर

उनमें ज़रा भी ग़ैरते ईमान बाक़ी है तो वह अपने – कलेजे पर हॉथ रखकर हम सुन्नी सहीहुल अक़ीदा मुसलमानों को बतायें के क्या इस इबारत से अंबियाए किराम की तौहीन है, अगर है तो तो ये कुफ़्र है के नहीं.....?

अजब हैरत में है कुछ सीने वाला जेब व दामां का,
जो ये टांका तो वह उधड़ा, जो वह टांका तो ये उधड़ा।

नाज़रीन! कुछ इसी तरह की बातें आपको "अक़ीदे की कहानी देवबंदी की ज़बानी" किताब में जाबजा नज़र आयेगी। वैसे तो ये उन्वान ऐसा है कि मुक़र्रिरों ने अपने बयान में मुहर्रिरों ने अपनी किताब में बहुत कुछ कहा और लिखा है। मगर अल्हाज मुईनुद्दीन आज़मी साहब का अपना मुनफ़रिद अंदाज़ है। ये लिखते हैं मगर सादगी का दामन हॉथ से जाने नहीं देते। भारी भरकम अल्फ़ाज़ लंबे–चौड़े जुमले, नई–नई तराकीबें इनके अहाते तहरीर से बाहर रहती है मगर एक आम क़ारी जो कुछ तलाशता है वह भरपूर अंदाज़ में इनकी तर्जे तहरीर में पाता है। बहरकैफ़! मुवल्लिफ की काविश लायेके तहसीन है। परवरदिगार अपने हबीब के सदके तुफ़ैल में इसे मक़बूल ख़ास व आम बनाये और जमाते अहले सुन्नत के हर फ़र्द को भरपूर फ़ायदा उठाने की तौफ़ीक़– रफ़ीक़ नसीब फरमाये आमीन................।

अब मै यही कहते हुवे रूख़्सत होने की इजाज़त चाहता हूं।

हम परवरिश लौह व क़लम करते रहेंगे,
जो दिल पे गुज़रती है रक़्म करते रहेगे।
मंजूर ये तल्ख़ीये सितम हमको गवारा
दम है तो मुद्दावाये अलम करते रहेंगे।।

फ़क़त वस्सलाम

मुहम्मद नूरआलम रिज़वी मिस्बाही
जामये मस्जिद सदर रोड
अम्बिकापुर सरगुजा छ.ग.

यकुम मुहर्रमुल हराम 1431 हि. बमुताबिक़ 19 दिसम्बर 2009 बरोज़ सनीचर।

۷۸۶/۹۲

مولانا محمد نور عالم نور رضوی مصباحی

جامعہ فیض الانوار جامع مسجد صدر روڈ امبیکا پور ضلع سرگوجا (۳۶ گڑھ)

موبائل نمبر — 9406030292 — 8103020894

تقریظ

الحاج ماسٹر محمد معین الدین اعظمی صاحب جو بہت ساری کتابوں کے مؤلف و مصنف ہیں۔ اور ہر کتاب میں ماشاء اللہ ایک نئے رنگ میں نظر آتے ہیں انہیں کی تالیف جدید کتاب عقیدے کی کہانی دیوبندی کی زبانی میں نے پڑھا پڑھکر یہ محسوس ہوا کہ اعظمی صاحب نے ان کے منہ پر ایسا زوردار طمانچہ انہی کے ہاتھوں سے لگایا ہے کہ جسکی ٹیس وہ مدتوں تک محسوس کرتے رہیں گے۔ سچ ہے زبان وہ کردار ادا نہیں کرتی جو کردار نوک قلم سے سجائی ہوئی تحریر ادا کرتی ہے قلم کی اہمیت ہر دور ہر لمحہ ہر وقت میں رہی ہے۔ بریلی شریف کا وہ قلم ہی تو تھا جس نے نجدیت کو انہیں کے شیش محل میں ننگا کرکے چھوڑا ہے

کلک رضا ہے خنجر خونخوار برق بار
اعداء سے کہہ دو خیر منائیں نہ شر کریں

نجدی مکتبۂ فکر کے سوچنے بولنے اور لکھنے کا انداز ہی نرالا ہے۔ یہ سوچتے ہیں تو نبی کے خلاف بولتے ہیں تو نبی کے خلاف اجتماع کرتے ہیں تو نبی کے خلاف

مگر حیرت سے سینہ کوبی کرتی ہوئی نظر آتی ہے کہ جو چیز اللہ کے رسول صلی اللہ علیہ وسلم کی شان اقدس میں استعمال کفر ہو جائے وہی چیز وہی عقیدہ اپنے نام نہاد ملاؤں کیلئے ثابت کریں مگر ایمان کا دامن بھی ہاتھ سے نہ چھوٹے۔ واہ رے نجدیوں کی پیر پرستی۔

اللہ رے خود ساختہ قانون کا نیرنگ
جو بات کہیں فخر وہی بات کہیں ننگ

یہ میرے زبان کی لفاظی نہیں بلکہ امر واقعہ ہے۔ کوئی افسانہ نہیں۔ ناقابل انکار حقیقت ہے۔ اور اگر یقین نہیں ہو تو **تقویۃ الایمان** صفحہ ۲۲ مکتبہ رحیمیہ دیوبند اٹھا کر دیکھیں ان کے پیشوا نے لکھا ہے " جس کا نام محمد یا علی ہو وہ کسی چیز کا مالک ومختار نہیں" اس خط کشیدہ الفاظ کو آپ بار بار پڑھیں اور دیکھیں۔ کہ اپنے ماتھے کو کلنک کے ٹیکے سے سجانے والی قوم اپنے نبی کے متعلق کیسا عقیدہ رکھتی ہے۔ ان توہین آمیز جملوں سے کیا یہ چند باتیں ابھر کر سامنے نہیں آتیں۔

(۱) کیا صاحب تقویۃ الایمان اللہ اس کے رسول سے لڑائی نہیں لڑ رہے ہیں؟

(۲) کیا اللہ اس کے رسول صلی اللہ علیہ وسلم کی صریح توہین نہیں کر رہے ہیں؟

(۳) کیا انہوں نے جناب محمد رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کو مجبور وبیکس بااختیار کو بے اختیار نہیں بنایا۔؟

(۴) کیا انہوں نے تقویۃ الایمان کے ہر قاری کے ذہن وفکر کو پراگندہ اور خوش عقیدہ سنی مسلمانوں کی دل آزاری نہیں کی۔؟

اب آیئے تصویر کا دوسرا رخ ملاحظہ فرمایئے۔ کہ جب ان دریدہ دہنوں نے اپنے بزرگوں کی مدحت سرائی کیلئے کاغذ اور قلم سنبھالا تو انہیں صف انبیاء

سے بھی آگے پہونچا دیا۔ وہ لکھتے ہیں۔

مردوں کو زندہ کیا زندوں کو مرنے نہ دیا
اس مسیحائی کو دیکھیں ذری ابن مریم۔

اس شعر کو پڑھنے کے بعد آپ سچے دل کے ساتھ بتا ئیں کہ اس سے یہ چند باتیں ثابت نہیں ہوتیں۔

(۱) رشید احمد گنگوہی صاحب مردوں کو زندہ کرتے ہیں۔

(۲) گنگوہی صاحب زندوں کو مرنے بھی نہیں دیتے۔ (یہ الگ بات ہے کہ مر کر خود ہی واصل جہنم ہو گئے)

(۳) گنگوہی صاحب مردوں کو زندہ کرنے ہیں اتنی حد تک تجاوز کر گئے کہ حضرت عیسیٰ علیہ السلام کو پیچھے چھوڑ دیا۔

(۴) گنگوہی صاحب اتنے بااختیار ہیں کہ موت وحیات ان کی مٹھی میں ہے۔ اور محمد وعلی نام رکھنے والے حضرات نعوذ باللہ کسی چیز کے مالک ومختار نہیں۔

(۵) مرثیہ رشید احمد گنگوہی میں گنگوہی صاحب حضرت عیسیٰ علیہ السلام کو دعوت نظارہ دے رہے ہیں کہ وہ آئیں اور میری مسیحائی کو دیکھیں۔

اب میں سنجیدہ مزاج مسلمانوں کو آواز دیتا ہوں کہ اگر ان میں ذرا بھی غیرت ایمان باقی ہے تو وہ اپنے کلیجے پر ہاتھ پر رکھ کر ہم سنی صحیح العقیدہ مسلمانوں کو بتائیں کہ کیا اس عبارتیں انبیائے کرام کی توہین آگئے تو یہ کفر ہے کہ نہیں۔؟

عجب حیرت میں ہے سینے والا جیب وداماں کا
جو یہ ٹانکا تو وہ ادھڑا جو وہ ٹانکا تو یہ ادھڑا۔

ناظرین کچھ اسی طرح کی باتیں آپکو عقیدے کی کہانی دیوبندی کی زبانی کتاب میں جا بجا نظر آئیں گی۔ ویسے تو یہ عنوان ایسا ہے کہ جسے مقرروں نے اپنے بیان میں محرروں نے اپنی کتاب میں بہت کچھ کہا اور لکھا ہے مگر الحاج معین الدین اعظمی صاحب کا اپنا منفرد انداز ہے۔ یہ لکھتے ہیں مگر سادگی کا دامن ہاتھ سے جانے نہیں دیتے۔ بھاری بھرکم الفاظ لمبے چوڑے جملے نئی نئی تراکیبیں ان کے احاطۂ تحریر سے باہر رہتی ہیں مگر ایک عام قاری جو کچھ تلاشتا ہے وہ بھرپور انداز میں ان کی طرز تحریر میں پاتا ہے۔ بہرکیف مؤلف کی کاوش لائق تحسین ہے۔ پروردگار اپنے حبیب کے صدقے طفیل میں اسے مقبول خاص و عام بنائے اور جماعت اہلسنت کے ہر فرد کو بھرپور فائدہ اٹھانے کی توفیق رفیق نصیب فرمائے۔ آمین۔

اب میں یہی کہتے ہوئے رخصت ہونے کی اجازت چاہتا ہوں۔

ہم پرورش لوح و قلم کرتے رہیں گے — جو دل پہ گزرتی ہے رقم کرتے رہیں گے
منظور یہ تلخی یہ ستم ہم کو گوارہ — دم ہے تو مداوائے الم کرتے رہیں گے

فقط والسلام

محمد نور عالم نوری رضوی مصباحی
بجامع مسجد صدر روڈ امبیکاپور سرگوجہ

یکم محرم الحرام ۱۴۳۱ھ مطابق ۱۹ دسمبر ۲۰۰۹ء بروز سنیچر

अक़ीदे की कहानी देवबंदी की ज़बानी

2. "एक नज़र ख़ास"

क़ारेईने किराम! आप ख़ूब – ख़ूब ये जान लें; आप ये अच्छी तरह समझ लें कि ज़ाहिरी तौर पर देखने में उल्माये देवबंद और तबलीग़ी जमात के लोग बहुत बड़े पाबंदे शरीअत, मुत्तबये सुन्नत, मुत्तक़ी और परहेज़गार लगते हैं। यहीं नहीं बल्कि वे शिर्क व बिद्अत से खुद भी बहुत सख़्त इत्तेनाब (परहेज़) करते हैं और दूसरों को भी शिर्क व बिद्अत से बचाने के लिये तल्क़ीन – तबलीग़ और हिदायत भी करते हैं। सचमुच उनके ज़ाहिरी तर्ज़े अमल और अफ़आल ऐन इस्लाम ही जान पड़ते हैं। वे अक्सर अपने वाजो तक़रीर के दौरान नबीए करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की तारीफ़ व तौसीफ़ भी करते हैं। बड़े ज़ोरो शोर से दुरूद शरीफ़ पढ़ते हैं और मौक़ा ग़नीमत जानकर सलाम व क़याम भी कर लेते हैं, जिससे जान पड़ता है कि वाक़ई ये लोग बड़े ही खुश अक़ीदा, निहायत मुत्तबये सुन्नत, आमिले शरीअत और रसूले पाक सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम के शैदाई और फ़िदाई हैं।

लेकिन...................अगर आप इनके तह के नीचे झांक कर देखें या जो अक़ायेद इनकी किताबों में शाये हुए हैं या देवबन्दी लिटरेचर में जो बयान किये गये हैं, उन्हें पढ़ें तो साफ़ तौर पर पता चलता है कि वे सब ही बात खिलाफ़े हक़ हैं। शरीअत के बरअक्स हैं। सब ही धोखा और फरेब है। उनके सारे जाहिरी तर्जे अमल और वाजो नसीहत सिर्फ़ नुमाईशी है। फ़कत दिखावटी है।

ये लोग सरवरे दो आलम सल्लल्लाहो सलैहे व सल्लम की तारीफ़ महज़ इसलिये करते है, दुरूदो सलाम फ़कत इसलिये पढ़ लेते हैं कि आम मुसलमानों को अपनी तरफ खींच सकें। भोले – भाले इन्सानों को माइल कर सकें। वरन् क़तई तौर पर रसूले अरबी सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम से उन्हें दिली मुहब्बत नहीं है, फ़ितरी लगाव नहीं है। क्योंकि अगर ये सच बात होती तो इनके अक़्वाल व

अक़ायेद जो इनके किताबों में दर्ज है वे हर्गिज़ नहीं होता और नबिये मुकर्रम सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम जो कायनात में वो बड़ी हस्ती के मालिक है जिनकी ज़ातोपाक और शानो अज़मत अल्लाह तआला के बाद सबसे ज़्यादा बुज़ुर्ग और बरतर है, कि ख़िलाफ़ में गुस्ताख़ी नहीं करते। ना मुनासिब अल्फ़ाज़ से उन्हें नहीं पुकारते।

तो आइये! यह छोटी किताब "अक़ीदे की कहानी, देवबंदी की ज़ुबानी" (जो हक़ीक़तन बड़ी किताबों पर भारी पड़ेगी) को दिल की आँखों से पढ़िये। हक़ व बातिल को जानिये। अक़ीदे की सच्चाई को पहचानिये। इसमें वहाबियत और देवबंदियत का पूरा – पूरा नक्शा खींचा गया है। उनके असल अक़ीदे को उन्हीं की ज़ुबान से निकली हुई या सुनाई गयी बात को लिखी गई है। मुझे क़वी उम्मीद है कि इसे पढ़कर यक़ीनन आपका ज़मीर जाग जायेगा और आप ख़ुद ही हक़ और सदाक़त का फ़ैसला बआसानी कर सकेंगे। सही अक़ीदे को जान जायेंगे।

हज़रात! मैं ये बातें किसी तआसुब और तरफ़दारी से नहीं लिख रहा हूँ बल्कि हक़ीक़त के आईने में तबलीग़ी जमात का अस्ल चेहरा दिखा रहा हूँ। याद रखिये! ईमान का दारोमदार "अक़ीदे" पर ही है और बग़ैर सही अक़ीदे के कोई भी अमल काम नहीं आयेगा। कोई भी नेकी कारगर साबित नहीं होगी।

यह किताब जो आपके हाथ में है इसमें बाहर से किसी किताब का हवाला मैं नहीं दिया हूँ। अपनी तरफ़ से कोई बात नहीं लिखा हूँ। बल्कि वहाबियों की ग़लतबयानी का जवाब उन्हीं की तहरीरों से दिया हूँ। अक़ायेद के बाबत उल्माये देवबंद के अक़्वाल और इबारतों को उन्हीं के मुसन्निफ़ (तहरीर कर्दा) के हैं ताकि उन्हें इन्कार की कोई गुंजाइश न हो। उन्हें बहाना बाज़ी करने का मौक़ा ही हाथ न आये। हाँ, अलबत्ता तंबीह और नोट के तौर पर उन्हीं के क़ौल की वज़ाहत कुछ ख़ास अल्फ़ाज में जा–बजा ज़रूर कर दिया गया है, जिससे की बात पूरी तरह से समझ में आ सके। हासिले मक़सद का ख़ुलासा हो सके।

यह बड़ी ख़ुश नसीबी और कामयाबी की बात होगी कि काश! इस किताब से एक इन्कलाब बरपा हो जाये कि वहाबियों – देवबंदियों को तौबा नसीब हो जाये। उनकी रूह और क़ल्ब की सफ़ाई हो जाये।

वैसे इस किताब में पूरी कोशिश की गई है कि कोई भी ग़ल्तियाँ न हो, लेकिन अगर कहीं भूल से लग्ज़िस हो गई हो। छपाई या दीगर ज़राए (सबब) से कोई ख़ामिया रह गई हों तो बराये करम मुझे इत्तला दें ताकि दूसरे एडीशन में उसका सुधार हो सके।

यह किताब मंजरे आम में लाने बाबत मुझे कई किताबों से मदद मिली है लेकिन इसका बहुत बड़ा हिस्सा 'ज़ेरो – जबर' और 'तबलीग़ी जमात' नामी किताब से लिया गया है। साथ ही दूसरी किताब मसलन 'अक़ायेद उल्माये देवबंद (हिन्दी तर्जुमा) 'ख़ून के आंसू' वग़ैरह से भी मेरी रहनुमाई हुई है। मैं इन सबके मोसन्निफ़ हज़रात का बेहद ममनूह (एहसानमन्द) और शुक्रगुजार हूँ। अल्लाह पाक इन्हें जज़ायेख़ैर अता फ़रमाये।

आख़िर में रब तआला से मेरी पुर ख़ुलूस दुआ है कि मदनी ताजदार, हबीबे किर्दगार सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के सदक़े तुफ़ैल से न सिर्फ़ इस किताब – "अक़ीदे की कहानी, देवबंदी की ज़बानी" को क़बूल व मक़बूल फ़रमाये बल्कि हर ख़ासो आम मुसलमान को हिदायत बख़्शे। सही बात और सच्चे अक़ीदे को मानने और सिराते मुस्तक़ीम पर चलने की तौफ़ीक़ फ़रमाये। आमीन ! सुम्मा आमीन !!

तारीख़ ....

तरतीब और पेशकश
ख़ाक पाये रसूल

अल्हाज मु0 मोईन आज़मी
आरा – बलरामपुर,
सरगुजा (छ.ग.)

3 – तंबीह और वज़ाहत

किताब – 'अक़ीदे की कहानी, देवबन्दी की ज़बानी' को तफ़सीली मालुमात से क़बल आइये, हम देवबंदी जमात और वहाबी मसलक के कुछ अहम रहनुमा, अकाबिर और पेशवा के बारे में कुछ जान लें। सरसरी तौर पर बानिये तबलीगी जमात और इनके पैरोकार के हालते जिंदगी और किरदार पर नज़र कर लें, ताकि इनके अक़ायेद, फ़तवे और ग़लत बयानी को इन्हीं की ज़ुबानी से जानने – समझने में हमें आसानी हो।

1 मौलवी अशरफ अली थानबी के किरदार और अक़ायेदः–

(1) कहते हैं कि थाना भऊन में जहाँ मौलवी अशरफ अली थानवी रहते थे। एक लड़की उनसे पढ़ती थी। जब वह आ़लमे शबाब (जवानी) पर पहुँची तो उनसे (यानी थानवी साहब से) वह मुरीद हो गई। इसके बाद क्या हालात पेश आये होंगे, खुदा ही जानता है। लेकिन कुछ अर्से बाद अचानक मालूम हुआ कि उन्होंने अपनी पुरानी बीवी की मौजूदगी में उससे अक़्दो निकाह कर लिया।

निकाह की ख़बर मशहूर होते ही सारे मुहल्ले में आग – सी लग गई। हज़ार मुंह हज़ार की सी बातें होने लगी। इसी को उन्होंने खुद अपने क़लम से अपने एक रिसाला– "अलख़तुबुल मज़ीबा" में लिखते हैं जो थाना भवुन की औरतों की ज़ुबान पर थी –
"हाय! बेटी – बेटी कहा करते थे, जोरू बनाकर बैठ गये। हाय! उस्ताद होकर शार्गिदनी को कर बैठे और मुरीदनी भी तो थी। पीर और बाप में क्या फ़र्क होता है। मालूम होता है पहले ही से कुछ साज़ – बाज़ रहा होगा।" अलख़तुबुल मज़ीबा सफा – 6)

इस वाक़्या के बाद लोगों की तानाकशी से तंग आकर, अपनी रूस्वाइयों से बचने के लिये या उस पर पर्दा डालने के लिये उन्होंने एक गैबी इल्हाम (खुदाई पैगाम) तराशा और खुद ही उसकी ताबीर भी बयान की, जो इस तरह है :–

"एक ज़ाकिर सालेह (नेक परहेज़गार) को मुनकशफ़ (ज़ाहिर) हुआ कि अहकर (कमतर) के घर हज़रत आइश आने वाली हैं, उन्होंने मुझसे कहा।" (इस पर) मेरा ज़ेहन इस तरफ़ मुन्तकिल हुआ

– (कि कमसिन बीवी मिलेगी)। इस मुनासिबत (तआ़ल्लुक़) कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने हज़रत आइशा रज़िअल्लाहो तआ़ला अन्हा से जब निकाह किया था तो हुज़ूर का सन् शरीफ़ पचास से ज़्यादा था और हज़रत आइशा (रजि.) बहुत कम उम्र थीं। वही किस्सा यहाँ है। (अलख़तुबुल मज़ीबा सफा – 8)

अशरफ़ अली थानवी ने जिस बेगै़रत इन्सान बनकर यह क़िस्सा बयान किया है यक़ीनन अपने दाग़दार दामन का गु़बार – रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम के दामने अतहर पर उड़ाना चाहते हैं। वरन् कहाँ हज़रत आइशा सिद्दीका रजि. अल्लाहोत्तआ़ला अन्हां के साथ हुज़ूर अहमदे मुख़्तार सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के अक़्दो निकाह का क़िस्सा, जिसके पीछे रब्बुल आलमीन का इशारा कर फरमा था और मसलते इलाही पर रूहुल अमीन इसके पयामबर (क़ासिद) है और कहाँ थाना भऊन के एक रंगीन मिज़ाज की बात और अल्हाम।

इस फिक़रे (जुमला) ने तो वाक़ई वह अदबो इहतराम की दीवार ही गिरा दी है जो पैग़म्बर और उम्मती के दर्मियान रोज़े अज़ल से खड़ी है।

अब आप खुद ही ग़ौर फरमाइये कि इस क़िस्से और मशनूई कशफ़ व उसकी ताबीर से ईमान और अक़ीदा के जज़्बे को ना – तलाफी ठेस लग सकती है या नहीं..........? हज़रत आइशा सिद्दीका रजि. अल्लाहो तआ़ला अन्हा जो मादरे मोमिन है के इहतरामों अदब का खून हो सकता है या नहीं.........? थानवी साहब के ये रसूले दुश्मनी और गुस्ताख़े नबी है या नहीं..........? फ़ैसला आपके हाथ है।

2. इसी तरह दारूल उलूम देवबन्द की मजलिस शूरा के रूक्न मौलाना अहमद सईद अक़बराबादी अपने माहनामा "बुरहान देलही" में थानवी साहब के मुतअ़ल्लिक लिखते हैं कि –
"एक मर्तबा किसी मुरीद ने मौलाना (अशरफ़) को लिखा कि मैंने रात ख़्वाब में अपने आप को देखा कि हर चन्द कलमा तशहुद सही–सही अदा करने की कोशिश करता हूँ लेकिन हर बार ये होता है कि– "लॉ इलाहा इल लल्लाह" के बाद 'अशरफ़ अली रसूलुल्लाह' मुंह से निकल जाता है।
इस पर थानवी साहब ये फ़रमाकर बात आई – गई कर देते

हैं कि– "तुमको मुझ से ग़ायत (बेहद) मुहब्बत है। ये सब उसी का नतीजा है।" (बुरहान फरवरी 1952, सफ़ा 107)

यही नहीं, बल्कि बेदार होने के बाद मुरीद की जुबान पर उनकी नुबूवत का इक़रार बदस्तूर जारी रहा जैसा कि अपने ख़त में वह थानवी साहब को लिखता है :–

"इतने में बन्दा ख़्वाब से बेदार हो गया। लेकिन..... ख़्वाब और बेदारी में हुज़ूर (थानवी साहब) का ही ख़्याल था....। कलमा शरीफ़ की ग़लती पर.इरादा हुआ कि इस ख़्याल को दिल से दूर किया जाये। फिर दूसरी करवट लेटकर कलमा शरीफ़ की ग़लती के तदारुक (तलाफ़ी) में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम पर दुरूद शरीफ़ पढ़ता हूँ लेकिन फिर भी कहता हूँ – "अल्लाहुम + म सल्ले अ़ला सय्यदना व नबीयना व मौलाना अशरफ़ अली।" हॉलांकि अब मैं बेदार हूँ, ख़्वाब नहीं। लेकिन बेअख़्तियार हूँ। मजबूर हूँ। ज़बान अपने काबू में नहीं।"

(रिसाला अलइमदाद मतबूअ थाना भवुन, बाबत शऊवाल 1335 हि. सफ़ा 34)

मुरीद के लिखे ख़त के जवाब में थानवी साहब हौसला अफ़ज़ा ज़वाब इस तरह लिख भेजते हैं – "इस वाक़्या में तसल्ली थी कि जिसकी तरफ़ तुम रूजूअ करते हो वह वे औनेहि ताअ़ला मतीअ सुन्नत है।" (अल इमदाद सफ़ा 34)

(नोट) :– मुरीद के इस कहने या ख़त लिखने पर थानवी साहब तो सीधा और साफ़ जवाब ये देते कि – "ऐ मुरीद, ये सब कलिमए कुफ़्र है। शैतान का फ़रेब और नफ़्स का धोखा है। तुम फ़ौरन ही तौबा करो। इस्तिग़फार पढ़ो।" लेकिन उन्होंने जानबूझकर कुफ़्र की तालीम दी या फिर उन्हें अपने आप को नबी बनने का शौक चर्राया।

3. थानवी साहब के मलफ़ूज़ात (कहा गया) के मुरत्तिब ख़्वाजा अज़ीज़ुल हसन लिखते हैं कि – "हज़रत (थानवी) ने मुझ अहकर (नाचीज़) को मुख़ातिब करके फ़रमाया – "देखिये! मेरा तारीख़ी नाम–"मक्र अज़ीमा" (बड़ा फरेबी) ठीक है या नहीं.....? मैं आख़िर शैख़ ज़ादा हूँ, शैख़ ज़ादे बड़े ही फ़ितरती

होते हैं। मुझे भी फ़ितरतें बहुत आती है।"

(हसन अज़ीज़िया जि. 1 सफ़ा 13)

नोट :– अब इसी से अन्दाजा लगाया जा सकता है कि थानवी साहब के किरदार और चलन कैसे थे, जिन्होंने बड़े फ़क्र के साथ 'मक्र' और 'फ़रेब' जैसे शर्मनाक ऐब को खुद तसलीम करते हैं। ख़ुदा ऐसे फ़ितरती और मक्कार आदमी की ताअ़लीम से बचाये।

अब इनके कुछ अक़ायेद पढ़िये :–

1. तमाम देवबन्दी उल्मा और थानवी साहब का ये अक़ीदा है कि – "हालते नमाज़ में हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम का ख़्याल लाना गदहे और बैल के ख़्याल में डूब जाने से ज़्यादा बुरा है। हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम का ख़्याल आते ही नमाज़ फ़ासिद (ख़त्म, तबाह) हो जायेगी।"

(सिराते मुस्तकीम सफ़ा 78)

बाला तहरीर कर्दा अक़ेदे की ताईद में इन लोग ये दलील देते हैं कि– "हालते नमाज़ में अगर हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम का ख़्याल ताजीम के साथ आयेगा जिससे ग़ैरे खुदा का ख़्याल 'शिर्क' की तरफ़ खींच ले जायेगा।"

अब देखिये! इस अक़ीदा के बरअक्स मौलाना थानवी साहब का क्या हाल है ? वे क्या हिदायत देते हैं। इनके (थानवी साहब के) ख़ास ख़लीफ़ा मौलवी अब्दुल माजिद दरियाबादी थे, जिन्होंने एक बार ख़त में लिखा – "नमाज़ में जी न लगने का मर्ज़ बहुत पुराना है, लेकिन कभी ये तजुर्बा हुआ कि ऐन हालते नमाज़ में जब कभी बजाये अपने जनाब (वाला) को या........... को फर्ज़ (लाज़मी) कर लिया तो इतनी देर तक नमाज़ में दिल लग गया। लेकिन मुसीबत ये है कि खुद ये तसव्वर (ख़्याल) भी अर्सा तक क़ायम नहीं रहता। बहरहाल! अगर ये अ़मल महमूद (ठीक) है तो तस्वीद (तहरीर) फ़रमाई जाये वरन् आइन्दा इहतियात रखूंगा।"(हकीमुल उम्मत सफ़ा 54)

अब देखिये, थानवी साहब इसके जवाब में क्या ही मज़े की बात फ़रमाते हैं :– "महमूद (ठीक) है जब कि दूसरों को इत्तला न हो।" (हकीमुल उम्मत सफ़ा 54)

नोट :– देखा आपने! यक़ीनन इससे तो थानवी साहब के

दिल की चोरी पकड़ी जा सकती है। वह बाहर से तो कैसे तौहीद का अलमबरदार बनते हैं और अन्दर से अपनी परसतिश (पूजा) कराते हैं। शैख़ परस्ती की ताअलीम देते हैं। शिर्क की कैसी मीठी बात बोलते हैं।

2. थानवी साहब के मलफ़ूज़ात (कहा गया) का मोरत्तिब (पेशकश, तरतीब) उनका मुँहबोला ये बयान नक़ल करता है, जिसमें आपने (थानवी साहब ने) फ़रमाया है कि – "मैं दावत और हदिया में हराम व हलाल को ज़्यादा नहीं देखता क्यों कि मैं मुत्तक़ी नहीं हूँ।" (कमालात अशरफ़िया सफ़ा – 406)

3. थानवी साहब की बात को नक़ल करने वाले ख़्वाजा अजीजुल हसन साहब लिखते हैं कि – "हज़रतवाला (थानवी साहब) सरापा रहमत शख़्सियत पर बिला मुबालग़ा "व कफ़ा बिल्लाहे शहीदन।" का वह लक़ब सादिक़ (सच) आता है।"

(अशरफ़ुस्सवाना)

(नोट) :– यानी मुसन्निफ़ अजिजुल हसन, थानवी साहब को रहमतुल लिल आलमीन मानता है। क्या ये बात रसूल दुश्मनी की हद को पार नहीं करती ....?

4. एक मर्तबा किसी शख़्स ने मौलाना थानवी साहब से ये सवाल पूछा– "हुजूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की विलालदत्त पाक की खुशी में जब अबू लह्ब जैसे काफ़िर को लौंडी आज़ाद करने में उसे आख़िरत में (नेक) सिला मिला तो मुसलमान अगर अपने सरकार नामदार सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम की विलादत पाक की खुशी मनायें तो उन्हें कोई अज्र व सवाब मिलेगा या नहीं.........?"

तो इस सवाल पर थानवी साहब ने ये जवाब दिया – "हमारी ये खुशी जायज़ होती अगर दलायेल शरअईया मुनकिरात (इनकार करने वाले) को मना न करते और ज़ाहिर है कि मुबाह (जायज़) व ग़ैर मुबाह का मजमूआ ग़ैर मुबाह (नाजायज़) होता है।

(कमालात अशरफ़िया सफ़ा – 444)

नोट :– थानवी साहब के इस अक़ीदा और फतवा का खुलासा ये निकला कि नबी सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम की विलादत शरीफ़ा पर खुशी का इज़हार करना यानी मीलाद करना नाजायज़

है। तो अब इसमें शक ही नहीं जो काम शरिअत में नाजायज़ होता है उसका आख़िरत में कोई भी सवाब नहीं मिलेगा।

अब मुन्दर्जा ज़ेल की बातों पर ग़ौर करें कि थानवी साहब खुद अपने बारे में क्या अक़ीदा रखते हैं? कैसा फ़तवा फ़रमाते हैं जिससे उनका चहेता मुरीद ख़्वाजा अज़ीज़ुल हसन साहब अपने बारे में एक जगह लिखते हैं – "मैंने शर्माते लजाते हज़रत (थानवी) से अर्ज़ किया – मेरे दिल में ये बार – बार ख़्याल आता है कि काश मैं औरत होता हुजूर के निकाह में................... ।"

मेरे इस कहने पर हज़रत वाला ग़ायत (बेहद) दर्जा मसरूर होकर बे – अख़्तियार हँसने लगे और ये फ़रमाते हुए मस्जिद के अंदर तशरीफ़ ले गये और बोले ये आपकी मुहब्बत है, सवाब मिलेगा! सवाब मिलेगा !! (अशरफ़ुस्सवाना जि. 2 सफ़ा 28)

नोट :– गौर फ़रमाइये! थानवी साहब की खुद बीनी और खुद परस्ती का ये तमाशा जश्ने ईद मिलादुन्नबी मनाकर मुसलमान अपने महबूब पैगम्बर सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम के साथ इज़हारे मुहब्बत करें तो उनके लिये कोई अज्र व सवाब नहीं है लेकिन थानवी साहब के मुरीदों की ज़ौजह बनने की तमन्ना करके उनसे इज़हार मुहब्बत करें तो उस बेहूदा ख़्याल पर भी उन्हें सवाब मिलेगा! सवाब मिलेगा!! वाह रे! थानवी साहब के फ़तवे और अक़ीदे में रसूल दुश्मनी की बात।

5. अशरफ़ुस्सवाना का मुसन्निफ दारूल उलूम देवबन्द अपने पीरो मोर्शो अशरफ़ अली थानवी के मुत्तल्लिक़ लिखता है :–

"दारूल उलूम देवबन्द के एक बहुत बड़े जल्सए दस्तारबन्दी में बअज़ हज़रात अकाबिर ने इर्शाद फ़रमाया कि – "अपनी जमात की मसलेहत के लिये हुजूर सरवरे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के फ़ज़ायेल बयान किये जायें ताकि अपने मजमा पर जो वहाबियत का शुबहा (शक) है वह दूर हो । ये मौक़ा भी अच्छा है क्योंकि इस वक़्त मुख़्तलिफ़ तबक़ात के लोग यहाँ मौजूद हैं।"

ये सुनकर हज़रत वाला (थानवी साहब) ने बेअदब अर्ज़ किया कि इसके लिये रिवायत की ज़रूरत है और वह रिवायत मुझको मुस्तहदर (याद) नहीं? (अशरफ़ुस्सवाना जि. 1 सफ़ा 76)

नोट :– मुलाहिज़ा फ़रमाइये कि देवबन्द के अकाबिर और थानवी साहब के कितने बुरे ख़्यालात और अक़ायेद के हामी है जो धोखेबाजी, फ़रेब और मक्कारी की ताआलीम देते हैं। जो मसलेहत के तहत यानी वहाबियत का शुबहा दूर करने के लिये सरवरे आलम सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम के फ़ज़ायेल बयान कराने का ढ़ोंग करते हैं। मानो इनका मज़हब ही ग़िरगिट का रंग हो।

6. थानवी साहब की इल्मी सलाहियत और ज़ेहनों फ़िक्र की जीती जागती तस्वीर का एक अक़ीदा और एक मसला यों देखिये:– "हाथ में कोई नजिस (गन्दी चीज़) लगी थी, उसको किसी ने ज़बान से तीन दफ़ा चाट लिया तो पाक हो जावेगा, मगर चाटना मना है।" (बहिश्ती ज़ेवर 2 हिस्सा सफ़ा 18)
नोट :– देखिये इनके ख़्यालकि गन्दी चीज़े ख़्वाह पाखाना, लीद या गोबर भी हो तो उसे बजाये धोने के चाटने से ही जिस्म या कपड़े पाक हो जायेंगे। खुदा की पनाह ऐसे देवबंदी/वहाबी के अक़ीदे, फ़त्तवे और इल्म से ....।

7. थानवी साहब के इल्मो–फ़न, चलन और किरदार क्या और कैसे थे, उसके चन्द नमूने आपके सामने पेश किये गये। अब बड़े मज़े की बात देखिये कि उनके चहेता शागिर्द और देवबन्दियों के मुस्तनद आलिम मौलवी मु. आशिक इलाही मेरठी साहब उनकी अज़मत और बड़ाई के बारे में क्या लिखते हैं:–

"वल्लाहुल अज़ीम मौलावा थानवी के पॉव धोकर पीना नजात ओख़रवी का सबब है।" (तज़कतुर्रशीद जि. 1 सफ़ा 113)

नोट :– यहाँ आम लोगों को हिदायत दी जा रही है कि अगर कोई आख़िरत में नजात पाना चाहता है तो वह थानवी साहब के पॉव धोकर पिये। वाह रे! देवबन्दी अकाबिर की शानो शौकत...!

2. रशीद अहमद गंगोही के किरदार और अक़ायेद :–

1. गंगोही साहब का सवानेह निगार लिखता है कि – बारहा (बहुत दफ़ा) आपको अपनी ज़बॉं फ़ैज़े तरजुमा से ये कहते सुना गया है कि– "सुन लो! हक़ वही है जो रशीद अहमद की जुबां से निकलता है और बाक़सम कहता हूँ कि मैं कुछ नहीं हूँ मगर इस ज़माने में हिदायत व नजात मौकूफ़ है मेरे

इत्तबा पर। (तज़कतुर्रशीद जि. 1 सफ़ा 17)

अब ज़रा ग़ौर से देखिये कि उनका ये दावा करना कि इस ज़माने में हिदायत व नजात उनकी इत्तबा पर मौकूफ़ है। क्या यह बात पैग़म्बरी के दावे से कम नहीं..........?

नोट :– गंगोही साहब का असल मक़सद ये है कि हसूले (हासिले) नजात के लिये (माअज़ल्लाह) अब रसूले अरबी सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम की इत्तबा (पैरवी) का ज़माना ख़त्म हो गया। अब नजात का दारोमदार 'नये हादी' (रशीद अहमद) के इत्तेबा पर है। वे अब एक उम्मती नहीं बल्कि पैग़म्बर की जगह पहुँच गये। "अल्लाह की पनाह"।

2. "तज़करतुर्रशीद" के मुसन्निफ़ आगरा के कोई मुन्शी अमीर अहमद का एक ख़्वाब नक़ल किया है कि – "गन्गोह में कोई शीया रहता था। जब वह मर गया तो मुन्शी जी ने उसे ख़्वाब में देखा और उससे दरयाफ़्त किया कि – "मरने के बाद तुम पर क्या गुज़री और अब तुम किस हाल में हो.....?"

तो उसने जवाब दिया – "मैं अज़ाबे इलाही में गिरफ़्तार हूँ। हालते बीमारी में मौलाना रशीद अहमद साहब देखने तशरीफ़ लाये थे। जिस्म के जितने हिस्से पर मौलवी साहब का हाथ लगा, बस उतना हिस्सा तो अज़ाब से बचा है बाक़ी जिस्म पर बड़ा अज़ाब है। (तज़कतुर्रशीद जि. 2 सफ़ा 324)

नोट :– देखिये! अब आप ही ग़ौर कीजिये कि इनका एक अदना हाथ लग जाने से तो शीया जैसा बाग़िये हक़ भी अज़ाबे आख़िरत से बच सकता है, लेकिन रसूले खुदा, महबूबे किबरिया सललल्लाहो अलैहे व सल्लम के मुत्तलिक़ इन हज़रात के अक़ीदे की ज़बान ये है कि – "वे (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) खुदा के यहाँ न किसी को कोई नफ़ा पहुंचा सकते हैं और न किसी को अज़ाब ही से बचा सकते हैं।" (तक़वीयतुल ईमान सफ़ा 48)

3. रशीद अहमद गंगोही साहब एक जगह लिखते हैं कि– "लफ़्ज़ रहमतुल लिल आलमीन" सिफ़त ख़ास रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की नहीं है। (दूसरे भी हो सकते हैं)"

नोट :– यहाँ पर भी गंगोही साहब पर्दे की आड़ में अपने आप को रहमतुल लिल आलमीन बनने का मन्शा बना रहे हैं। "खुदा की पनाह।"

गंगोही साहब के कुछ अक़ायेद और फ़तवे :–

(1) गंगोही साहब लिखते हैं – "मुहर्रम में ज़िक्रे शहादत हुसैन अलैहिस्सलाम का करना अगरचे रिवायत सही हो, सबील लगाना, शर्बत पिलाना, चन्दा सबील देना या दूध पिलाना सब ना दुरूस्त तशबिहो रवाफ़िज (राफिजों से मुशाहबत) की वजह से हराम है।" (फ़तवा रशीदया जि. 2 सफ़ा 128)

नोट :– यक़ीनन इस फ़तवे से गंगोही साहब की तंगदिली और खुले तौर पर यज़ीद पलीद की हिमायत व जिगर गोशये रसूल के साथ दुश्मनी और ताअसुब ही कहा जा सकता है। इसकी वजाहत में अगला नम्बर मुलाहिजा फ़रमाइये :–

(2) किसी ने गंगोही साहब से सवाल किया–"जिस जगह ज़ाग मअरूफ़ा यानी कौवा को हराम जानते हों और खाने वालों को बुरा कहते हों ऐसी जगह उस कौवा खाने वाले को कुछ सवाब होगा? या ना सवाब होगा........? या अजाब होगा..........? इसके जवाब में गंगोही साहब यह कहते हैं – "सवाब होगा।" (फ़तावा रशीदया जि. 2 सफ़ा 130)

नोट :–यहाँ इन्साफ़ की नज़र से देखिये कि आबादियों में फिरने वाला आवारा और नजिस खाने वाला कौवा को अगर खाया जाए तो 'सवाब' होगा, लेकिन आले नबी के नाम की शीरनी और शर्बत पिया जाये तो उनकी नज़र में यह हराम है। कितनी सख़्त बेइन्साफ़ी की बात है।

(3) गंगोही साहब लिखते है कि – "बजरिये मनीआर्डर रूपये भेजना ना दुरूस्त और दाख़िले रबवा (सूद) है।"(फ़तावा रशीदया जि. 2 सफ़ा 128)

तंबीह और नोट :– ये तो आप भी जानते हैं कि 'सूद' हराम है। फिर भला यह कैसे मुमकिन है कि मुसलमान इस गुनाह से बच सके? साथ ही मआशी ज़िन्दगी की दुश्वारियों से बचने का क्या हल हो सकेगा......?

(4) किसी ने गंगोही साहब से दरयाफ़्त किया – "ईदैन में मआनका करना (गले लगाना) और बगलगीर होना कैसा है? इसके जवाब में आपने इर्शाद फ़रमाया – "ईदैन में मआनका करना विद्अत है।"(फ़तावा रशीदया जि.2 सफ़ा 154)

नोट :– अहादीस पाक में आया है कि – "विद्अती को जहन्नम में भेजा जायेगा।" अब आप ही सोचिये कि मौलाना गंगोही के इस फ़तवे के अनुसार कितने ही मुसलमान ईदगाह से निकलते –निकलते जहन्नम के दरवाज़े तक पहुँच जाते हैं। ख़ुदा बचाये उनसे जो इस नेक अमल (मआनका) को विद्अत कहते हैं।

(5) मस्जिद का इहतराम करना इस्लामी शरिअत में किस क़दर ज़रूरी है, यह कम पढ़ा – लिखा मुसलमान भी जानता है। लेकिन इस बाबत गंगोही साहब का क्या फ़तवा है मुलाहिजा फ़रमाइये –

"मस्जिद में चारपाई बिछाना मुसाफ़िर और मुक़ीम दोनों को दुरूस्त है।" (फ़तावा रशीदया जि. 2 सफ़ा 99)

नोट :–अब जरा ग़ौर किया जाये के मस्जिद में चारपाई बिछाकर और पांव फैलाकर सोया जाये तो फिर उसकी पाकीज़गी कहाँ तक रह जायेगी...? साथ ही मकान और मस्जिद में क्या फ़र्क़ रह जायेगा? ताज्जुब है कि वहाबी और देवबंदी हज़रात इस पर ग़ौर क्यों नहीं करते........?

(6) "तक़्वीयतुल ईमान" में है कि – "हर किसी को चाहिए कि अपनी हाजत की चीजें अपने रब से मॉगे। यहाँ तक कि नोन (नमक) भी उसी से मांगे और जूती का तसमा जब टूट जाये तो वह भी उसी से मांगे।" (तक़्वीयतुल ईमान सफ़ा 34)

इसी के ज़वाब में तज़कतुर्रशीद के हवाले से रशीद अहमद गंगोही साहब के मुरीद का ये वाक़्या पढ़िये –

" एक रोज़ ख़ान्काह में लेटे हुवे अपने शगल (ध्यान) में मशगूल थे कि कुछ सुकर (मस्ती) पैदा हुआ और हज़रत शाह वली अल्लाह कुद्स सिरा को देखा कि सामने तशरीफ़ ले जा रहे हैं। चलते – चलते उनको मुख़ातिब बताकर इस तरह फ़रमाया कि देखो – "जो चाहो हज़रत मौलाना रशीद अहमद गंगोही साहब से चाहना।"

(तजकतुर्रशीद जि. 2 सफ़ा 309)

नोट :– अब बड़े मज़े की बात देखिये कि तक़्वीयतुल ईमान में तो हर चीज़ अपने रब से मांगने की बात कही गई है लेकिन यहाँ पर रब को छोड़कर मौलवी रशीद अहमद गंगोही साहब से सब कुछ चाहने (मांगने) की हिदायत फरमाई गई है। फ़ैसला आप खुद कीजिये। क्या यह अक़ीदा शिर्क नहीं है......? क्या यह अपने मौलाना को बाआख़्तियार और तसर्रूफ़ साबित करने की दास्ताँ नहीं है...........? क्या यह गंगोही साहब की तौहीद परस्ती का ढोंग रचाने की बात नहीं है...? ग़ैरों के लिये मसला कुछ और....। घर के बुजुर्गों के अख़्तियार और बा कमाल और....। ताअ़सुबं की तो हद हो गई भाई..।

गंगोही सा. की कुछ और ख़ास बातें :–

1. मौलवी महमूद हसन साहब (सदर मुदर्रिस देवबंद) ने तो ग़ज़ब ही कर दिया। वे अपने मर्सिया अशआर में रसीद अहमद सा. गंगोही के बारे में कैसी – कैसी बातें लिखते हैं। मुलाहिजा फ़रमाइये :–

खुदा उनका मुरब्बी वो मुरब्बी थे ख़लायक के,
मेरे मौला मेरी हादी थे बेशक शेख रब्बानी।

(मर्सिया रशीद अहमद सफ़ा 12)

यानी रशीद अहमद सा. ख़लाये़के मुरब्बी (जगत के पालनहार) है। ये लफ़्ज़ रब्बुल आलमीन के हममाना है। देवबन्द की अक़ीदत मन्दी तो देखिये कि खुले लफ़्ज़ में बेला किसी इम्तयाज़ के अपने पीर को सारी मख़्लूक का पालनें वाला कह रहे हैं। क्या ही पीर परस्ती का यह एक अच्छा नमूना है।

2. उल्माये देवबन्द और इनके पैरोकार रशीद अहमद गंगोही सा. को बानिये इस्लाम (यानी खुदा और रसूल) का सानी जानते हैं जैसा कि महमूद हसन सा. तहरीर करते हैं :–

"ज़बाँ पर अहले अहवा की क्यों ओलो होबल शायद,
उठा आलम से कोई इस्लाम का बानी।"

(मर्सिया रशीद अहमद सफ़ा 6)

3. देवबन्दी मौलवी के नज़दीक सब हाज़तों का क़िबला रशीद

अहमद गंगोही सा. हैं। इनके सिवा कोई हाजत रवा नहीं है लिहाज़ा! रूहानी और जिस्मानी की सभी हाज़ते उन्हीं से तलब करें। देखिये महमूद हसन साहब इस बाबत क्या ही ख़ूब फ़रमाते हैं :–

हवायेज दीनो दुनियाँ की कहाँ ले जायें हम यारब,
गया वो क़िबलये हाजते रूहानी व जिस्मानी।

(मर्सिया रशीद अहमद सफ़ा 10)

नोट :– जहाँ खुद गंगोही साहब फ़तावयेरशीदिया में लिखते हैं – "गैरूल्लाह से मदद माँगना शिर्क है" और यहाँ पर उन्हीं का चहेता महमूद हसन साहब दीनो दुनियां की हाजतें उन्हीं से मांग रहे है। क़िबलये हाजत तस्लीम कर रहे हैं। तो इससे क्या मौलवी महमूद हसन साहब मुश्रिक हुवे कि नही?

4. अहले देवबंद के नजदीक रशीद अहमद साहब शानो अज़मत ईसा अलैहिस्सलाम से भी बढ़ – चढ़ कर है इसीलिये तो महमूद हसन साहब लिखते है। :–

मुर्दों को ज़िन्दा किया जिन्दों को मरने न दिया,
इस मसीहाई को देखें ज़रीं इब्नमरियम।

(मर्सिया रशीद अहमद सफ़ा 33)

इसका मानी और महफ़ूम ये हुआ कि (रशीद अहमद गंगोही) मुर्दा को जिन्दा कर देते और ज़िन्दों को मरने नहीं देते इस मसीहाई (करामात) को देखें ज़री इब्न मरियम।

नोट :– मुर्दो को ज़िन्दा कर देने में तो दोनो ही बराबर है। लेकिन जिन्दों को मौत से बचा लेना गंगोही साहब की एक अलग ही शान है। यानी हज़रत ईशा अलैहिस्सलाम से मौलवी रशीद अहमद गंगोही साहब की अज़मत बढ़ी–चढ़ी है। काराईन हज़रात आप इन्साफ़ की नज़र से देखिये कि इससे हज़रत ईसा अलौहस्सलाम की तौहीन होती है या नहीं. ..? रशीद अहमद गंगोही साहब को पैगम्बर बनाने का दावा किया गया है या नहीं........? ज़िन्दों को मरने नही देते (और खुद भी मर गये) यह सच बात है या नहीं ....?

3. मौलाना इलयास सा. के किरदार और ताआरूफ़

(1) तबलीगी जमात के बानी (बुनियाद रूखने वाला) मौलाना इलयास साहब के बारे में मौलाना अबुल हसन अली. नदवी ने एक जगह "दीनी दावत" में लिखते है :–

"उम्मी बी (मौलाना इलयास की नानी) मौलाना पर बहुत शफ़ीक़ (मेहरबान) थी। वे फ़रमाया करती थी कि" – ऐ अख़्तर (इलयास) मुझे तुझ से सहाबी की खुश्बू आती है। कभी पीठ पर हॉथ रखकर मुहब्बत से फ़रमाती थी "क्या बात है कि तेरे साथ मुझे सहाबा की सी सूरते चलती फिरती नज़र आती है........?"

(दीनी दावत सफ़ा 42)

नोट :– देखिये बचपन में ही जब सहाबये किराम की रूहें उनके इर्द – र्गिद घूमती फिरती थी तो जवानी में उनका क्या आलम होगा? कितने जुल्म ढाये होगे......? ये सोचने और समझने की बात है।

(2) "दीनी दावत" के ही सफ़ा – 45 में ये लिखा है कि मौलाना (इलयास) फ़रमाते थे कि – "जब मैं जिक्र करता था तो मुझे एक बोझ सा महसूस होता था।"

यह बात जब उनके पीर मुर्शिद हाजी साहब ने सुना तो फ़रमाया – "(ऐ इलयास !) आप से अल्लाह कोई काम लेगा।"

नोट :– तबलीग़ी जमात के लोग इनसे इतने ज्यादा मुत्तसिर (प्रभावित) थे कि उनकी नज़र में मौलाना इलयास का मुक़ाम एक पैग़म्बर से कम नहीं था। अल्लाह बचायें ऐसे मकर फ़रेबी और बनावटी पैग़म्बर से..............................।

★★★

4. मौलाना क़ासिम नातूतवी के किरदार और अक़ायेद

(1) 'सवानये क़ासमी' का मोसिन्निफ़ लिखता है कि – एक बार मौलाना क़ासिम नातूतवी ने हाजी साहब से ये शिकायत की कि – "जहाँ तस्वीह लेकर मैं बैठा एक मुसीबत होती है। इस क़दर गिरानी के जैसे – सौ–सौ मन के पत्थर किसी ने रख दी है। ज़बान व क़ल्ब सब बस्तह हो जाते है...। (बंध जाते है, मिल जाते है)

(सवानये क़ासमी जि. सफ़ा 258)

इस बात पर हाजी साहब ने उन्हे मुख़ातिब करते हुवे कहा – "ये नुबूवत का आपके क़ल्ब पर फ़ैज़ान होता है। और ये वो बोझ है जो हुजूर सललल्लाहो अलैहे व सल्लम का 'वही' के वक़्त महसूस होता था। तुमसे हक़तआला को वह काम लेना है जो नबियों से लेता है।"

(सवानये क़ासमी जि. 1 सफ़ा 258)

नोट :– मौलाना अबुल हसन नदवी के लिखने के मुताबिक़ (मआज़ अल्लाह) इनके क़ल्ब पर भी नबूअत का फ़ैज़ान था। रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम की तरह नजूले 'वही' की गिरानी महसूस होती थी। तौबा – तौबा ऐसे बेबहरे, नुमाइशी और रेयाकार नबियों पर।

(2) मौलाना क़ासिम नातूतवी का ये अक़ीदा मुलाहिजा फ़रमाइये:–

"अंबिया अपनी उम्मत से अगर मुमताज़ (अफ़ज़ल) होते हैं, तो इल्म ही में मुमताज़ होते हैं। बाक़ी रहा अमल। इससे बसा औक़ात बज़ाहिर उम्मती मसावी (बराबर) हो जाते हैं, बल्कि बढ़ जाते हैं।

(तहजिरून्नास सफ़ा 5)

यहाँ भी देखिये कि ये हज़रात अ़मल की बुनियाद पर अपने आप को नबी और पैग़म्बर से भी आगे बढ़ जाने का दावा कर रहे हैं। लगता है शैतान भी इनसे मात खा गया............।

क़ारेईन किराम! इस तरह आपने देखा, पिछले औराक़ में साफ़तौर पर आपने मुशाहिदा किया कि तबलीग़ी जमात के बानी मौलाना इलयास ही नहीं बल्कि मौलाना थानवी साहब, मौलाना रशीद अहमद, गंगोही और मौलाना क़ासिम नातूतवी तक सबने यकसाँ तौर पर मनसबे नबूअत की तरफ़ पेशकदमी ही नहीं बल्कि पैग़म्बर होने का भी दावा किया है। खुदा की पनाह! अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त हर मुसलमान को इनसे बचाये। इनसे दूर ही रखे......।

आइये! अब किताब के असल मुददा और उन्वान – "अक़ीदे की कहानी, देवबंदी की जबानी" का आग़ाज़ करें। जिसमें सिलसिलेवार दो ख़ास और बुनियादी अक़ायेद :– ग़ैबदानी (कशफ़) और करामात (तसरूफ़) के बारे में (देवबंदी – वहाबी की बातें) दर्ज़ की गई है। इनकी एक जुबान और दो फ़रमान का ज़िक्र किया गया है। इनके एक मुंह से और दो बात का जायज़ा लिया गया है। इसे आप ख़ूब पढ़िये, समझिये और सही नतीजा पर पहुँचकर खुद भी अ़मल कीजिये और दूसरों को भी इसके पैरोकार बनाइये।

★★★

4. ग़ैबदानी और कशफ़ का अक़ीदा

पहला अक़ीदा :– इस बाबत देवबन्दी (वहाबी) जमात के चन्द बुनियादी अक़ीदा मुलाहिजा फ़रमाइयें :–

1. "कोई शख़्स किसी से कहे कि फलाँ के दिल में क्या है...... ? या फलाँ की शादी कब होगी..? या फलाँ दरख़्त में कितने पत्ते हैं...? या आस्मान में कितने सितारे हैं.....? तो उसके जवाब में ये न कहें कि – अल्लाह के रसूल ही जाने क्यों कि ग़ैब की बात अल्लाह ही जानता है। रसूल को क्या खबर? (तक़्वीयतुल ईमान सफ़ा 58)
2. " जो कोई ग़ैब की बातें बताने का दावा रखता हो, उसके पास जो कोई जाकर 'कुछ' पूछे तो उसकी इबादत चालीस दिन तक क़बूल नहीं होती। क्योंकि उसने शिर्क की बात कही है और शिर्क सब इबादतों का नूर खो देता है। (तक़्वीयतुल ईमान सफ़ा 53)
3. "जो शख़्स अल्लाह जल्ले शानहू के सिवा इल्म ग़ैब किसी दूसरे को साबित करे तो वह बेशक काफ़िर है। उसकी इमामत, उससे मेल जोल, मुहब्बत सब हराम है।" (फ़तवा रशीदिया सफ़ा 29)
4. "और इस बात में (यानी ग़ैब की बात जानने में) औलिया व अंबिया और जिन्न व शैतान और भूत व परी में कुछ फ़र्क़ नहीं।" (तक़्वीयतुल ईमान)
5. "जब अंबिया अलैहिस्सलाम को भी इल्म ग़ैब नहीं होता तो "या रसूलल्लाह" कहना भी नाजायज़ होगा। अगर ये अक़ीदा करके कहे कि वह दूर से सुनते हैं बसबब "इल्म ग़ैब" तो वह खुद कुफ्र हैं।" (फ़तवा रशीदिया जि. 3 सफ़ा 807)
6. "जो कोई किसी का नाम उठते – बैठते लिया करे और दूर व नज़दीक से पुकारा करे और बला के मुक़ाबले में उसकी दोहाई देवे और दुश्मन पर उसका नाम लेकर हमला करे और उसके नाम काख़त्म पढ़े या शग़ल करे या उसकी सूरत का ख़्याल बान्धे और यों समझें कि मैं जब उसका नाम लेता हूँ ज़बान से या दिल से उसकी सूरत या क़ब्र का ख़्याल बान्धता

हूँ तो वहीं उसको ख़बर हो जाती है और उससे मेरी कोई बात छुपी नहीं रह सकती और जो मुझ पर अहवाल गुज़रते हैं जैसे बीमारी व तन्दुरूस्ती, कशायेशो तन्गी, मरना व जीना, ग़म व ख़ुशी सबको हर वक़्त उसे ख़बर है। और जो बात मेरे मुंह से निकलती है वह सब सुन लेता है और जो ख़्याल व वहम मेरे दिल में गुज़रता है वह सबसे वाकिफ़ है तो इन बातों से (वह) मुश्रिक हो जाता है (क्यों कि) इस क़िस्म की बातें शिर्क है। ख़्वाह यह अक़ीदा अंबिया व औलिया से रखे, ख़्वाह पीर व शहीद से, ख़्वाह इमाम व इमामज़ादा से, ख़्वाह भूत व परी से, हर तरह शिर्क साबित होता है।" (तक़्वीयतुल ईमान सफ़ा 10–11, बरेलवी फ़ितना सफ़ा 67)

अब इन पिछले अकायेद (अक़ीदों) को जेरे नज़र रखते हुए देवबन्दी साहिबानों का ये दूसरा अक़ीदा मुलाहिजा फ़रमायें :–

दूसरा अक़ीदा :–

ग़ैबदानी और कशफ़ के बाबत वहाबी और देवबन्दी के दो रूख़ी अक़ायेद देखिये, समझिये और ख़ुद फ़ैसला कीजिये :–

(1) इन्केशाफ़ का मुसन्निफ़ लिखता है :–

"दुनिया जानती है कि अकाबिर देवबन्द जैसे :– हज़रत मौलाना नातूतवी, हज़रत मौलाना गंगोही, हज़रत मौलाना अशरफ़ अली थानवी वग़ैरह अपने ज़माने के आलिम व मोहद्दिस ही नहीं थे बल्कि बातनी उलूम (ग़ैबी बात) के भी बहुत बड़े अमीन (मुहाफ़िज) थे। ये हज़रात अकाबिर अपने क्लूब के तसफ़ीया (फ़ैसला) की वजह से अन्वारे तजल्लियात और आलमे मिसाल का बेहेजाब मुशाहिदा अपनी आँखें से किया करते थे।" (इन्केशाफ़ सफ़ा 24)

(2) मुबसिरात नामी किताब में लिखा है कि :–

"बअ़ज़ कामिल ईमान बुजुर्गों को जिनकी उमर का बेश्तर हिस्सा तज़किये नफ़्स और रूहानी तर्बियत में गुज़रता है। बातनी और रूहानी हैसियत से उनको मिनजानिब अल्लाह से ऐसा मलकये रासिना (पक्का महारत, काब्लियत) हासिल होता है कि ख़्वाब या बेदारी में उस पर वह उमूर खुद ब खुद मुन्कशफ़ (अयाँ, उजागर) हो जाते हैं, जो दूसरों की नज़रों से

पोशीदा हैं।" (मुबसिरात सफ़ा 12)

(3) देवबन्द के एक बुजुर्गशाह अब्दुर्रहीम साहब रायपुरी के मुत्तलिक़ थानवी साहब क्या अक़ीदा रखते है। ग़ौर कीजिये :– "मौलाना शाह अब्दुर्रहीम साहब रायपुरी का क़ल्ब बड़ा ही नूरानी था। मैं उनके पास बैठने में डरता था कि कहीं मेरे ऐब मुन्कशफ़ (बेनक़ाब) न हो जाये।" (अर वाहुस्सलासा सफ़ा 401)

(4) यहीं नहीं एक देवबन्दी तालिबेइल्म – "वली मुहम्मद", रशीद अहमद गंगोही साहब के बारे में कैसा अक़ीदा रखता है। मुलाहिजा फ़रमाइये:– "हज़रत (गंगोही) के सामने जाने में मुझे डर मालूम होता है क्योंकि क़ल्ब के वसास (वसवसे) अख़्तियार में नहीं और हज़रत उन पर मुत्तला (वाक़िफ़) हो जाते हैं। (तज़करतुर्रशीद जि. 2 सफ़ा 227)

(5) मौलवी नजमुलइस्लाम पानीपत्ती के हवाले से एक रिवायत इस तरह नक़ल किया गया है – "एक रोज़ सय्यद (अहमद बरेलवी) साहब ने फ़रमाया कि – "अल्लाह तआ़ला ने मुझे ऐसी बशीरत इनायत की है कि मैं देखकर (ग़ैबी कुव्वत से) कह सकता हूँ कि ये बहिश्ती है या दोज़ख़ी?" उस वक़्त एक मौलवी साहब......ने पूछा – कि मैं किस फ़रीक़ में हूँ? तो आपने फ़रमाया – "तुम तो शहीद हो।"

(सवानये अहमदी सफ़ा 72)

(6) ग़ैबी इल्म व इदराक (अक़्ल) की एक दायमी कूवत (मुस्तकिल ताक़त) मौलवी रशीद अहमद गंगोही के हक़ में देवबन्दी मुसन्नेफ़ीन क्या ही ख़ूब बयान करते हैं –

"इस ज़माने में रशीद अहमद साहब गंगोही को हक़ तआ़ला ने वो इल्म दिया है कि जब कोई हाज़िर होने वाला अस्सलामुअ़लैकुम कहता है तो आप उसके इरादे से वाक़िफ़ हो जाते हैं।" (तज़करतुर्रशीद जि. 1 सफ़ा 312)

(7) ग़ैबी इल्म की कूवत को मौलवी क़ासिम साहब नातूतवी और अब्दुल्लाह खान नामी एक मुस्लिम राजपूत के लिये भी साबित की गई है जिसमें तहरीर कर्दा इस तरह रिवायत करते हैं –

"उनकी हालत ये थी कि अगर किसी के घर में हमल होता और वह ताबीज़ लेने आता तो आप फ़रमाया करते थे कि तेरे घर में लड़की होगी या लड़का और जो आप बतला देते वही होता था।" (अरवाहुस्सलासा सफ़ा 163)

(8) देवबन्दी उल्मा जानवरों तक में इल्म ग़ैब की हक़ीक़त को तस्लीम करते हैं। कशफ़ की बात को मानते हैं। इसीलिये तो मौलवी मंजूर नूमानी अपनी एक किताब में तहरीर फ़रमाते हैं कि – "हम मिस्र गये थे। वहॉं एक जलसा बड़ा भारी था। देखा कि एक शख़्स है जिसके पास एक गदहा है। उसकी ऑंखों पर एक पट्टी बन्धी हुई है। एक चीज़ एक शख़्स की दूसरे के पास रख दी जाती है। उस गधे से पूछा जाता हैं? गदहा सारी मजलिस में दौरा करता है, जिसके सामने (वह चीज़) होती है। (वह वहीं) सामने जाकर सर टेक देता हैं।" यह वाक्या नक़ल करने के बाद नूमानी साहब फ़रमाते हैं – "ख़ान साहब के इस मलफ़ूज़ (पढ़ा गया) से मालुम हुआ कि मौसूफ़ के नज़दीक उस गदहे को भी बअज़ मख़्फ़ी (छुपी) बातों का कशफ़ (उजागर) होता था।" (फ़ैसला कुन मुनाज़रा)

(9) किताब "तजकरतुर्रशीद" में दर्ज है जिसमें मीर वाजिद अली कन्नौजी फ़रमाते हैं कि मेरे मुर्शिद हज़रत मौलाना मुहम्मद क़ासिम साहब ने मुझसे बयान फ़रमाया कि – "मैं एक मर्तबा गंगोह गया खान्क़ाह में एक कोरा बधना रखा था। मैंने उसको उठाकर कुंवे में से पानी खींचा और उसमें भरकर पिया तो पानी कड़वा लगा। ज़ोहर की नमाज़ के वक़्त हज़रत (रशीद अहमद गंगोही) से मिला और ये वाक़्या भी अर्ज़ किया। आपने फ़रमाया – "कुंवे का पानी तो मीठा है, कड़वा नहीं है। "मैंने वह कोरा बधना पेश किया, जिसमें पानी भरा हुआ था। हज़रत ने भी चखा तो बदस्तूर तल्ख था। आपने फ़रमाया–"अच्छा इसको रख दो।" यह फ़रमाकर ज़ोहर की नमाज़ मेंमशगूल हो गये। सलाम फ़ेरने के बाद हज़रत ने नमाज़ियों से फ़रमाया–"कलिमा तय्यबा जिस क़द्र जिससे पढ़ा जाये पढ़ो और ख़ुद भी हज़रत ने (कलिमा) पढ़ना शुरू

किया। थोड़ी देर के बाद हज़रत ने दुआ के लिए हाथ उठाये और निहायत खुजू व खुशू के साथ दुआ मॉंगकर हॉंथ मुंह पर फेर लिये। इसके बाद बधना उठाकर पानी पिया तो शीरीं था। उस वक़्त मस्जिद में जितने नमाज़ी थे सबने चखा, किसी क़िस्म की तल्ख़ी और कड़वाहट न थी।"

तब हज़रत ने फ़रमाया कि "इस बधने की मिट्टी उस क़ब्र की है, जिस पर अज़ाब हो रहा था। अल्हम्दोलिल्लाह कलिमा की बरकत से अज़ाब रफ़ा हो गया।" (तज़करतुर्रशीद जि. 2 सफ़ा 212)

नोट :– वाह रे! रशीद अहमद गंगोही साहब की ग़ैबदानी जिसमें उन्होंनें आलमे बरज़ख़ की बात ही नहीं बताई बल्कि उन्होंने यह भी कह डाला कि बधने की मिट्टी उस क़ब्र की है जिस पर अज़ाब हो रहा था। साथ ही उन्हें यह भी मालूम हो गया कि उस मुर्दे का अज़ाब भी रफ़ा हो गया। अगर यही अक़ीदा हम सुन्नी मुसलमान अपने प्यारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम और वलि अल्लाह के लिये ज़ाहिर करें तो इनके सीने में सांप लोटने लगता है। इनके दिलों में कुफ़्र और शिर्क का नासूर उबलने लगता है.........।

कारेईने किराम हज़रात खुद बतायें कि रशीद अहमद गंगोही साहब की ये ग़ैबदानी शिर्क व कुफ़्र है या नहीं ?

(10) आख़िर में देवबंदी पैरोकार – 'बरेलवी फितना' के तहरीर क़र्दा की ये बात पढ़िये जो सच्चाई पर ही मबनी नहीं बल्कि ऐन इस्लाम ही है। जो क़रीब – क़रीब हमारे अक़ीदे के मेल से ही है। आप फ़रमाते हैं कि "चौथी सूरत इल्मग़ैब की ये है कि रसूलल्लाह सललल्लाहो अलैहे व सल्लम के लिये अल्लाह के बराबर जमीअ़ ग़ोयूब का इल्म मोहित (अहाता किया हुआ) तफ़सीली तो न माना जाये, लेकिन इब्तदाये आफ़रे नैश (पैदाइश) आलम से लेकर क़यामत तक या महशर के हिसाब व किताब और दाखिले जन्नत व नार तक जमिअ़एशिया यानी तमाम कायनात हाज़रा व ग़ायेबा की एक – एक जुज़ई इल्म (आप के लिये) मोहीत तफ़सीली का अक़ीदा रखा जाये।" (बरेलवी फ़ितना सफ़ा 92)

नोट :– इस तहरीर से अब ये बात वाज़ेह हो गई। साफ़ तौर पर साबित हो गई कि सरवरे कायनात सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम के लिये इल्मगैब का ये अक़ीदा देवबन्दी हज़रात के नज़दीक भी शिर्क और कुफ़्र नहीं है। और ये भी साबित हो गया कि आग़ाज़े तख़लीक़ आलम से लेकर जन्नत, दोज़ख़ यानी तमाम कायनात मौजूदा और आइन्दा की एक–एक बात का तफ़सीली इल्म का (हुज़ूर सलल्लाहो अलैहे व सल्लम पर) अक़ीदा रखना पूरी तरह से जायज़ और दुरूस्त है।

इसे हम दूसरे लफ़्ज़ों में भी कह सकते हैं कि "नबिये करीम सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम की सारी बातें इब्तदा से लेकर इन्तहा (क़यामत) तक जो हो चुका, जो हो रहा और जो कुछ होने वाला है, सारी कायनात के एक–एक ज़र्रा, एक–एक क़तरा और एक–एक वाक़्या का तफ़सीली इल्म है।"

इस तरह तबलीग़ी जमात और वहाबियों के इन बाला मज़कूरा दोनों अक़ीदों को आपने अच्छी तरह से देखा – भाला। फिर तो अब मुझे कुछ कहने की ज़रूरत नहीं बल्कि आप ही बेसाख़्ता यही बोल उठेंगे – "ये कैसी बे – इन्साफ़ी, हक़ तलफ़ी और बेवफ़ाई का मामला है। ये कितनी तंगदिली और दो – रूखी की बात है कि एक तरफ़ तो इनके पेशवा, हज़रत गंगोही, मौलाना नातूतवी और मौलवी थानवी साहेबान वग़ैरह भी नबी सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम के हक़ में अताई इल्म के अक़ीदे को ग़लत मानते हैं। इसे शिर्क समझते हैं। साथ ही औलिया अल्लाह के कशफ़ और इल्म ग़ैब को भी वे झूठ तस्लीम करते हैं। उन्हें कुफ़्र कह डालते हैं। लेकिन दूसरी तरफ ये ही हज़रात अपने लिये या अपने कामिल बुज़ुर्गों के लिये सरीह (अलानिया) तौर पर कशफ़ का अक़ीदा रखते हैं। अपने अक़ाबिर के लिये ग़ैबी इल्म और मुशाहिदा को इक़रार करते हैं। अपने घर के बुज़ुर्गों के हक़ में ऐन इस्लाम मानते हैं। बिल्कुल ईमान समझते हैं। वाह रे तबलीग़ी जमात की सूझ – बूझ! वाह रे वहाबियों का इल्म!! वाह रे इनके एक मुंह से निकली दो अलग – अलग बात, खुदा की पनाह! अल्लाह इनके अक़ायेद से बचाये। इनके मसलक से दूर ही रखे...........।"

★★★

5. करामात और तसर्रूफ़ का अक़ीदा

पहला अक़ीदा :–

(1) नबी और वली (सब) मरकर मिट्टी में मिल गयें।' (तक़्वीयतुल ईमान सफ़ा 42)

(2) "मुराद पुरी करनी, हाजते बर लानी, बलायें टालनी, मुश्किल में दस्तगिरी करनी, बुरे वक़्त में पहुँचना ये सब अल्लाह ही की शान है और किसी अंबिया – औलिया की, पीरो –शहीद की, भूत और परी की ये शान नहीं जो किसी को ऐसा साबित करे और उससे मुराद मांगे और इस तवक्का पर नज़्रो – नियाज़ करे और उसकी मिन्नतें और मुसीबत के वक़्त उसको पुकारे, सो वह मुश्रिक हो जायेगा।" (तक़्वीयतुल ईमान सफ़ा 10)

(3) "सारा कारोबार जहान का अल्लाह ही के चाहने से होता है, रसूल के चाहने से कुछ नहीं होता।"(तक़्वीयतुल ईमान सफ़ा 58)

(4) "जिसका नाम मुहम्मद या अली है। वह किसी चीज़ का मुख़्तार नहीं।" (तक़्वीयतुल ईमान सफ़ा 27)

(5) तफ़हीमात नामी किसी किताब के हवाले से लिखा गया है – "जो शख़्स अपनी हाजत रवाई के लिये अजमेर जाये या सय्यद सालार मस्ऊद ग़ाज़ी के मज़ार पर या इसी तरह दूसरी जगह पर मुराद मांगे, तो यक़ीनन उसका गुनाह ज़िना और नाहक़ क़त्ल करने से भी बड़ा है।" (इन्केशाफ़ सफ़ा 104)

(6) "बाअ़ता (दिये हुवे) खुदाबन्दी भी किसी के मुत्तलिक तसर्रूफ़ (करामात) का अक़ीदा रखना शिर्क है।" (तक़्वीयतुल ईमान)

(7) "फिर ख़्वाह यों, समझे कि इन कामों की ताक़त उनको खुद ब खुद है ख़्वाह यों समझे कि अल्लाह ने उनको ऐसी क़ुदरत बख़्शी है तो हर तरह शिर्क साबित है।"(तक़्वीयतुल ईमान)

(8) "औलिया अल्लाह को ये क़ुदरत नहीं कि ग़ैर मौजूद को मौजूद बख़्श दे। यानी किसी मौजूद को मआदुम (ख़तम) कर देने या किसी को रिज़्क या औलाद देने या किसी से कोई

बीमारी या कोई बला दूर कर देने की किसी बुज़ुर्ग की तरफ़ निस्बत करना कुफ़्र है।" (बरेलवी फ़ितना सफ़ा 101)

(9) इसी किताब (बरेलवी फितना) में एक जगह ये भी दर्ज़ है– "और न ऐसा है कि अल्लाह ताअ़ला ने आलममें तसर्रूफ करने की कुदरत उनको दे दी है और इन्सानों के मामलात उनके हवाले कर दिये हों और वह बेअमरे इलाही (अल्लाह के हुक्म से) अपनी कुदरत से ये तसुर्रफ़ात आलमे कौन (दुनियाँ, जहान.........) में करते हैं। ऐसा अक़ीदा रखना खालिस शिर्क व कुफ़्र है। जो कोई इन औलिया अल्लाह के बारे में ये क़बीह (नामुनासिब) अक़ीदा रखे, वह विला शुब्ह मुश्रिक व काफ़िर है।" (बरेलवी फ़ितना सफ़ा 43)

अब इनका दूसरा अक़ीदा मुलाहिजा फ़रमायें :–

दूसरा अक़ीदा :–

1. इस्तेलाहत सूफ़िया नामी किताब में देवबन्दी हज़रात ने भी ये इक़रार किया है कि – औलियाये किराम की वलायत और उनकी करामात उनकी वफ़ात के बाद भी बाक़ी और बेइजनेल्लाह (अल्लाह के हुक्म से) जारी रहती है। इस ज़िमन में इतना समझ लीजिये कि अल्लाह के हुक्म से अरवाहे औलिया दुनियाँ में भी आ सकती है और बहुक्में इलाही दूसरे की मदद भी कर सकती है।" (इन्कशाफ़ सफ़ा 67)

2. मज़कूरा वाला किताब के ही हवाले से लिखा गया है कि – "यही लोग (यानी पेशवाये देवबन्दी) मस्नदे इर्शाद (नेक हिदायत और ओहदा) के वारिस होते हैं। इनसे मख़्लूक़ की हाजरतवाई होती है। (इन्केशाफ़ सफ़ा 250)

नोट :– देखिये! इनकी दोरूख़ी नज़रिया। इनकी बे – इन्साफ़ी बात कि इनके बुज़ुर्ग तो मख़्लूक़ के हाजत रवा बन जाये लेकिन अंबिया और औलिया अल्लाह को हाजत रवा मानने से ये इन्कार करते हैं। शिर्क और कुफ़्र की बात कहते हैं। गुनाहे अज़ीम समझते हैं।

3. इन्केशाफ़ के ही सफ़ा 101 में दर्ज तहरीर का मफ़हूम ये है

कि "खुदा ही ने उन्हें (औलिया अल्लाह को) इमदाद व तसर्रूफ़ (करामात) की कुव्वत बख़्शी है तो यह क़तयतन शिर्क नहीं हैं।"

नोट :– देखते जाइये! ये कैसी – कैसी बाते करते हैं। एक ही अक़ीदा को किस – किस लफ़्ज़ में पेश करते हैं।

4. अशरफ़ अली थानवी के एक फ़तवे का खुलासा पढ़िये :– "किसी भी जिन्दा या मुर्दा शख़्स से गै़र मुस्तकिल यानी अ़ताई कुदरत का अक़ीदा रखकर मदद मांगना कुफ़्र नहीं है।" (फ़तावा इमदादिया जि. 4 सफ़ा 97)

नोट :– थानवी साहब के इस फ़तवे की रोशनी में ये बात बिल्कुल वाज़ेह तौर पर साबित हो गई कि औलियायेकिराम की अर वाह मोकद्दस को खुदा की तरफ़ से तसर्रूफ़ की कुदरत अ़ता की गई है तभी तो उनसे मदद मांगी जाती है।

5. मौलवी अख़्लाक़ हुसैन क़ासमी साहब अपनी एक किताब में तहरीर फ़रमाते हैं कि – "मोमिन की रूह ख़ास कर औलियाये हक़ और सलहाये उम्मत की रूहें जिस्म से जुदाई के बाद इस आलमे माद्दी में तसर्रूफ की कुदरत रखती है और इन अरवाह का तसर्रूफ़ क़ानूने इलाही के मुताबिक़ काम करता है।" (अहले अल्लाह की अज़मत उलमाये देवबन्द की नज़र में सफ़ा 34)

6. मौलवी इस्माईल साहब देहलवी अपने पीराने सलासिल के मुतल्लिक़ क्या कहते हैं? मुलाहिजा फरमाइये :– "बुलंद मरातिब और ऊँचे दर्जात पर फ़ायज़ होने वाले उन मर्दाने हक़ (औलिया अल्लाह) को कायनात हस्ती में तसर्रूफ़ का इज़्न (हुक्म) और अख़्तियार दिया गया है।" (सिराते मुस्तक़ीम सफ़ा 101)

7. क़ाज़ी सनाउल्लाह साहब पानीपती अपनी किताब में एक जगह लिखते है कि – "औलियायेकिराम दुनियाँ व आख़िरत में अपने दोस्तों और मुत्क़िदो (मुरीदों) की मदद करते हैं और उनके दुश्मनों को हलाक करते हैं।" (तज़करतुल मौला)

8. तसर्रूफ़ और करामात के मौज़ू पर मुफ़्तियाने देवबन्द ने ये

इक़्तेबास (इन्तख़ाब) नक़ल किया है :– "सहल इब्न अब्दुल्लाह से नक़ल किया गया है कि उन्होंने इर्शाद फ़रमाया के जो शख़्स दुनियाँ में पूरी सिद्क क़ल्बी और ख़ुलूस के साथ चालिस दिन तक इबादत करे तो उसके लिये करामत का ज़हूर हो जायेगा।"

सहल से जब पूछा गया कि –"करामत कैसे ज़ाहिर होती है. ..? तो उन्होंने फ़रमाया–"वह जो चाहे, जैसे चाहे, जिस तरह चाहे ले 'सकता' है।"

(यानी निज़ामे आलम में तसर्रुफ़ कर सकता है। उसके ज़रिये करामतों का ज़हूर हो सकता है।)

(ज़ामिउल करामात इन्कशाफ़ सफ़ा 23)

9. आगे चलकर इसी किताब के हवाले से मुफ़्तियाने देवबन्द लिखते हैं। जिनके चन्द सतर (लाइन) कुछ इस तरह हैं – "करामात की चन्द किस्में हैं – मुर्दों को जिन्दा करना, ज़मीन के ख़ज़ानों पर मुत्तला होना, पर्दों के बावजूद किसी दूर दराज़ वाले मुक़ाम को देख लेना, ज़मीन का उनके लिये सिमट जाना, मुख़्तलिफ़ (कई) सूरतों में ढल जाना, जमादात (पत्थर वगैरह) व हैवानात (जानवर) का कलाम करना, सतह समुन्दर को फाड़ देना, उसका सूख जाना, वगैरह।"

(ख़ुलासा इन्केशाफ़ सफ़ा 46 से 53 तक)

नोट :– अपने ही लोगों के क़ौल और अक़ीदा के ख़िलाफ़ तक़्वीयतुल के बानी इसका जवाब दें जो ये कहते हैं कि –

"जिसका नाम मुहम्मद या अ़ली है, वह किसी चीज़ का मुख़्तार नहीं। रसूल के चाहने से कुछ नहीं होता।"

10. देवबन्दी उल्मा और किताब 'बरेलवी फितना' के मुसन्निफ़ का ये अक़ीदा है कि – अंबिया और औलिया के अन्दर तसर्रुफ़ (करामात) की कुदरत मानना कुफ़्र है।"

अब देखिये, थानवी साहब क्या फ़रमाते हैं – "कोई रूह अपना बदन हालते हयात में छोड़कर दूसरे मुर्दे के बदन में

चली जाये ये बात रियाजत से हासिल हो सकती हैं।"

(तालिमुद्दीन सफ़ा 118)

नोट :– थानवी साहब के मजकूरा बाला तहरीर का खुलासा ये निकला कि – कोई शख्स रियाजत (जद्दोजेहद) के बल पर अपने अन्दर ये क़ुदरत पैदा कर सकता हैं कि जब चाहे अपनी रूह को अपने जिन्दे जिस्म से निकाल कर मुर्दा जिस्म में मुन्तकिल कर दे ! यानी एक जिन्दा जिस्म को मार डाले और मुर्दे जिस्म को जिन्दा कर दें। अब क़ाराईन हज़रात ही ग़ौर फ़रमायें कि किसी जिन्दा आदमी पर मौत तारी करना और किसी मुर्दा शख्स को जिला देना ये ख़ास खुदा का मनसब (रूतबा) हैं या नहीं ....? लेकिन थानवी साहब कितनी फराख दिली के साथ ये ताक़त एक इन्सान के अन्दर मान रहे हैं और वह भी ख़ुदा की अता से नहीं बल्कि अपनी रियाजत के बल बूते पर!

अब इससे भला बढ़कर शिर्क क्या हो सकता हैं ? एक बन्दे को उन्होने "मुही" (जिन्दा करने वाला) और "मुमीत" (मारने वाला) दोनो ही तस्लीम कर लिया और इसी को अगर हम सुन्नी मुसलमान किसी वली या नबी में खुदा की अता से ये ताक़त मान लें तो हम मुफ़ितयाने देवबन्द की नज़र में काफ़िर ठहराये जायेगें मुश्रिक कहे जायेगें। ये कितनी शर्मनाक, दुविधा और ताज्जुब की बात है।

11. इस्माईल देहलवी तबलीगी जमात के एक ख़ास रूक्न और हस्ती हैं जिन्होने एक मोराकबा का बाअसर बात फारसी जुबान में तहरीर फ़रमाया है जिसका उर्दू तर्जुमा कुछ इस तरह हैं :–

यानी सालिक (पांबदशरह, एक वली) इस मोराकबा (सोच विचार) की मदद से जहां चाहे जमीनों आस्मान और जन्नत व दोजख की सैर करे! वहां के हालात मालुम करें! और कभी–कभी उन लोगों से बातचीत का मौक़ा भी मयस्सर आ सकता हैं और उन से गुजिश्ता और आइन्दा पेश आने वाले

दीन व दुनिया के किसी भी काम में सलाह व मशवरा भी कर सकता हैं! (सिराते मुस्तकीम सफ़ा 117)

यही नहीं आगे चलकर जनाब इस्माईल साहब ये भी लिखते हैं कि – यानी तरीके सुन्नत पर चलने वाले शख़्स के अन्दर एक ऐसा "नूरकुदसी" पैदा हो जाता हैं जिसके जरिये वह किसी की भी बातनी (छुपी हुई) कैफ़ियत का मुशाहिदा कर सकता हैं। मुशाहिदा करने के लिये वह नूर कुदसी बिल्कुल ऐसा ही हैं जैसे महसूसात का मुशाहिदा करने के लिए ऑख में देखने की कुव्वत! (सिराते मुस्तकीम सफ़ा 197)

12. और भी बड़े मजे की बात देखियें! देवबन्दी ज़ुबान की दोहरी बात का मुशाहिदा करिये! इन्केशाफ़ के मुसन्निक अवारफुलमआरूफ़ के हवाले लिखते है (जो सईद बिन मुसीब सुलेमान से रिवायत हैं) कि– "मुमेनीन (ईमानदारों) की रूहें बर्जख़ अर्दी से जहॉ चाहती है ज़मीनों आसमान के दर्मियान आती – जाती हैं। (इन्केशाफ सफ़ा 70)

नोट :– ऊपर लिखी बात के निचोड़ और खुलासा में आप खुद बख़ूबी ये नतीजा निकाल सकतें है कि अर वाहें औलिया को किस क़दर मिन जानिबे अल्लाह आख्तियारात हैं।(इन्केशाफ़)

13. इनकी और एक अजीब दो रूखी वाक़्या मुलाहिजा फरमाइयें:– दारूल उलूम देवबन्द के सदर मुदर्रिस मौलवी मुहम्मद याकूब साहब अपनी मंजीले मक्सूद की तक्मील के लिये अजमेंर शरीफ़ गये और रौज़यें पाक के क़रीब अपनी एक कुटिया बना ली और वही पर क़याम पज़ीर हो गयें। अक्सर मज़ार पर हाज़िर होकर रूहानी इस्तफादह (नफा. फायदा) की ग़रज़ से देर तक मोराक़िब (धुन, ध्यान, सोच विचार) करते रहते!" (रोज़नामा अल जमीयह देहली के ख्वाजा गरीब नवाज़ नम्बर के हवाले से)

नोट :– हैं न अजीब बात! अक़ीदा में कैसा फेर बदल हो रहा हैं कि एक तरफ़ तो अपनी हाजत रवाई के लिए अजमेर जाना इन हज़रात के अक़ीदे में ज़िना से भी बड़ा गुनाह हैं और

दूसरी तरफ़ इसी गुनाह का इरतकाब (अमल) करने वाले को आप लोग अपना दीनी पेशवा और बुज़ुर्ग भी मानते हैं!

क़ारेईन हज़रात इस्लाम और सुन्नियत का ये अक़ीदा है कि अल्लाह के मुक़र्रब बन्दों को अल्लाह ताअला मख़सूस दर्जे और दायरे में तसर्रूफ़ (करामत) की कुदरत बख़्शी हैं और वे जब चाहते हैं इस खुदादाद कुदरत को अपनी तईं इज़हार फ़रमाते हैं! लेकिन अफ़सोस हैं कि देवबन्दी हज़रात इसका न सिर्फ़ इन्कार करते है बल्कि इसे कुफ़्र और शिर्क क़रार देते हैं! आइये अब हम देखें कि देवबन्दी मज़हब तसर्रूफ़ (करामात) के सिलसिले में अपने पेशाओं और अपने घर के बुज़ुर्गे के बारे में क्या कहतें हैं.? क्या अक़ीदा रखते हैं ? इसे किस तरह जायज़ और इस्लाम ठहराते है ? गौर से देखिये, अच्छी तरह से समझिये और हक़ व नाहक का फ़ैसला खुद कीजिए!

14. मौलवी मुहम्मद याकूब साहब नातूतवी देवबन्दी के एक मशहूर रूहानी पेशवा गुज़रे हैं! इनके बारे में "आर वाहे सलासा" का मुसन्निफ लिखता हैं कि उनके बड़े साहब जादे अपने वालिद के वाक़िया इस तरह बयान करते हैं –

"एक मर्तबा हमारे नातूता में जाड़ा बुखार की बहुत कसरत हुई। सो जो शख़्स मौलाना की क़ब्र से मिट्टी लेकर बॉध लेता तो उसे आराम हो जाता! बस इस कसरत से लोग मिट्टी ले गये कि जब भी क़ब्र में मिट्टी डालूं तब ही खत्म। कई मर्तबा डाल चुका। आख़िर परेशान होकर एक दफ़ा मैंने मौलाना की क़ब्र पर जाकर (गुस्से से) कहा–आपकी तो करामात हुई और हमारी मुसीबत हो गई। याद रखो कि अब से अगर कोई अच्छा हुआ तो हम मिट्टी नहीं डालेंगें! ऐसे ही पड़े रहो। लोग जूता पहने तुम्हारे ऊपर से ही चलेंगें!"

बस उस दिन से किसी को आराम न हुआ । जैसे शोहरत आराम की हुई थी वैसें ही शोहरत हो गई कि अब आराम नहीं होता। फिर तो लागों ने मिट्टी ले जाना बन्द कर दिया।

(अर वाहिस्सलासा सफ़ा 322)

नोट :– अब इस वाक्या के मददे नज़र तसर्रूफ से इनकार

करने वाले और औलियाए किराम से बीमारी या बला दूर करने की निस्बत को कुफ़्र और शिर्क कहने वाले देवबन्दी हज़रात से मैं ये चन्द बातें मालुम करना चाहता हूँ!

1. इस मदफन मिट्टी को दाफ़ाये अमराज़ और शिफा का अक़ीदा शिर्क व कुफ़्र हैं या नहीं....?
2. साहब जादे को अल्लाह से रूजू करने के बजाय क़ब्र में जाकर कुव्वतें शिफ़ा की वापसी की दरख्वास्त करना (सोभी घमकी के अन्दाज़ में शिर्क और कुफ़्र हैं या नहीं ......?
3. बेटे का ये समझना कि शिफ़ा की तासीर बाप की तरफ़ से है। ये अक़ीदा शिर्क और कुफ़्र हैं या नहीं ?
4. बेटे का यह मानकर कब्र में जाना कि तासीर का सलब खुदा नहीं बाप ही कर सकता हैं तो ये शिर्क व कुफ़्र है या नहीं?
5. बेटे के कहने पर बाप की क़ब्र की मिट्टी में शिफा की तासीर बदल जाना तसर्रूफ़ है या नहीं?
6. शिफ़ा बख़्शी का अक़ीदा लेकर उनकी क़ब्र पर लोगों का मेला लगाना शिर्क और कुफ़्र हैं या नहीं ?

दूसरे अक़ीदों के सिलसिले में अगला प्वाइन्ट देखे :–

15. जामये करामातुल औलिया के हवाले से शेख अबुल अबास नामी एक बुजुर्ग के मुत्तलिक लिखा गया हैं कि–"वे बारिश पर ऐसे क़ाबू याफ़ता थे कि वे बारिश को पैसों के मोआवज़े में फरोख़्त किया करते थें! (इन्केशाफ़ सफ़ा 50)

नोट :– कहां इन लोगों का ये कहना, ये अक़ीदा रखना कि – बारिश कब होगी ? इसको तो सिवा खुदा के कोई नहीं जानता! और इनका ये मानना कि कोई बुजुर्ग या वली हाज़त रवाई नहीं कर सकता लेकिन दूसरी तरफ़ ये तस्लीम भी करते है कि उनके बुजुर्ग को सिर्फ़ पानी का इल्म ही नहीं बल्कि वे पानी बरसाने की भी कुदरत रखते हैं! बरसात पर भी उनका अख़्तियार है तभी तो वे पैसों के मुआवज़े में पानी फ़रोख़्त करते हैं!

16. अमारत शरईया का तरजुमान "नक़ीब" अख़्बार फुलवारी ने

देवबन्दी फिरक़े के रूहानी पेशवा मौलवी अल्दुर्रशीद के राफ़ी–सागरी का एक क़िस्सा उनकी साहबज़ादी सामना ख़ातून यूं बयान करती हैं कि –

"जब हमारा घर बनने लगा तो वालिद साहब की हिदायत के मुताबिक़ सबसे पहले पाखाना (घर) में हॉथ लगा। वह ज़माना बरसात का था! लेकिन बरसात नहीं हो रही थी! धान की रोपाई हो चुकी थी। किसान सख़्त परेशान थे! मैने वालिद साहब से दरख़्वास्त की बारिश के लिए दुआ फ़रमा दीजिये, बहुत लोग परेशान है। फ़सल में ख़तरा है। वालिद साहब मुस्कुराने लगें और फ़रमाया – बारिश कैसे होगी अपना पारवाना (घर) जो बन रहा हैं, ख़राब हो जायेगा!"

(नक़ीब सफ़ा – 4)

नोट :– इस वाक़्या के बयान से क्या साफ़ तौर पर पता नहीं चलता कि इनके पेशवा सागरी साहब में तसर्रूफ़ की कूवत रही तभी तो बारिश रूकी रही ताकि उनका पाखान (घर) तैयार हो सके। वाह रे देवबन्दी – अक़ीदा! हम कहें तो इनकार और वो कहें तो इक़रार।

17. मौलवी अब्दुर्रहीम सहारनपुरी नाम के कोई देवबन्दी बुज़ुर्ग गुज़रे हैं उनके मुत्तलिक मौलवी जकरिया साहब ने एक क़िस्सायों बयान किया हैं!

"एक दफा हज़रत शाह साहब रह. वुज़ू कर रहे थें! एक कन्दील ऊपर उड़ा जा रहा था तो (अपने – ख़दिम से) वे फ़रमाने लगें–"मेरे चॉद! ये देख क्या जा रहा हैं?" मौलवी रोशन अली साहब ने फ़रमाया – "हज़रत! मुझे तो कुछ पता नही क्या हैं?" (वे) फ़रमाने लगें ये ज़ादू जा रहा है और मुझें अल्लाह ने ये कुदरत दी है कि मैं उसको उतार लूं।" मौलवी रोशन अली साहब ने कहा – ज़रूर उतार लें।"

हज़रत शाह साहब ने हाथ से इशारा किया, वह नीचे उतर आया। इसमें एक आदमी का पुतला बना हुआ था और उसमे बहुत सी सुइयां ऊपर से नीचें चुभाई गई थी। हज़रत ने उससे पूछा कि तू

कौन हैं....? अल्लाह ने उस गोवाई (बोलने की कुवत) अता फरमाई, उसने कहा मैं जादू हूँ। हज़रत ने उससे फ़रमाया, तू कहां से आया हैं और कहां जायेगा?"

उसने बताया – "फलॉं जगह से आया हूँ और फलां जगह जा रहा हूं।" हज़रत ने उससे दरयाफ़त फ़रमाया – "कि जिसने भेजा हैं उसका कहना मानेगा या हमारा ......? "उसने कहा अब तो आप ही का कहना मानूंगा।" हज़रत ने फ़रमाया – "जहां से आया हैं वही चला जा!

अगले दिन मालूम हुआ कि वह जादूगर मर गया! हज़रत ने फ़रमाया कि – "मैने ऐसा इसलिए किया कि न मालूम वह और कितनों को मारेगा?" (आप बीती 6 सफ़ा 376)

नोट :– गौर कीजिये–एक तरफ़ तो इनके बुजुर्गो में ये ताक़त हैं कि फ़िज़ा में उड़ते हुये बेजान पुतले को सिर्फ़ हाथ के इशारे से ज़मीन में उतार लें। उससे बात करें और बहुत से लोगों के सरों से बलायें टाल दें। लेकिन ताज्जुब है कि दूसरी तरफ़ देवबन्दियों का ही ये अक़ीदा हैं कि औलिया अल्लाह को हर्गिज़ ये कुदरत नहीं कि वो कोई तसर्रूफ़ (करामत) कर सकें। किसी की मुसीबत में काम आ सके। कोई बला को टाल सकें। वाह रे कथनी और करनी इनकी एक ज़ुबॉं और दो बात। अफसोस! सद अफसोस!!

आइये! तसर्रूफ़ के मामले में उल्माये देवबन्द के अक़ीदा का ये मज़ेदार वाक्या आप पढ़ियें। और खूब समझियें :–

"मौलवी क़ासिम साहब नानूतवी वफ़ात के बाद वे अपने एक देवबन्दी मनाज़िर की इमदाद के लिए अपने जिस्म ज़ाहिर के साथ मजलिसें मोनाज़रा में तशरीफ़ लाये और अपने तसर्रूफ़ की कुदरत का करिश्मा दिखाकर चले गयें। (सवानयें कासमी)

इसी से मिलता–जुलता तसर्रूफ़ का दूसरे लफ़्ज़ों में ये वाक़्या भी मुलाहिज़ा फ़रमाइये :–

"एक दिन मौलवी क़ासिम साहब नानूतवी अपने जस्दे ज़ाहिरी के साथ अपनी क़ब्र से निकलकर देवबन्द के मदरसे में चले आये और उस वक़्त के सदर मुदर्रिस को चन्द ज़रूरी हिदायत देकर वापिस लौट गयें।" (सवानयें कासमी)

नोट :– ये वाक़्या पढनें के बाद साफ़ तौर पर पता चला गया कि देवबन्दी मसलक में भी तसर्रूफ़ का अक़ीदा रखना सही और जायज़ हैं। और इनमें जो लोग ये कहतें हैं कि – "नबी – वली मर कर मिट्टी में मिल गये" वो सरासर ग़लत हैं। बिल्कुल बेसूद हैं। बे बुनियाद हैं। वल्कि इनकी तंग दिली और ताअसुब की बात ही कहिये। क़ारेईन हज़रात! पिछले औराक़ में तसर्रूफ़ और करामात के अक़ीदा में देवबन्दी हज़रात के दोनो अक़ायेद का आपने मुशाहिदा किया। यक़ीनन आपको भी लगा होगा कि ये लोग एक ही अक़ीदा को दो अलग – अलग ढंग से बयान करते हैं। एक ही ज़ुबान से दो अलाहदा – अलाहदा बात कहते हैं तो अब सच क्या हैं? और झूठ क्या है? इसका फ़ैसला न हम करें न आप करें बल्कि इन्ही के मसलक और इन्ही के पेशवा की मुंह से सुनें :–

मौलवी मुनाज़िर हुसेन साहब गीलानी जो तबलीग़ी जमात के एक खास रूक्न हैं। तसर्रूफ़ की ताक़त को इक़रार करते हुये लिखते हैं :– वफ़ात याफ़ता बुजुर्गो की रूहों से इमदाद (व तसर्रूफ़) के मसले में उल्मायें देवबन्द का ख़्याल भी वही हैं जो आम अहले सुन्नतुल जमात का हैं। (सवानयें कासमी)

आगे चलकर फिर चन्द सतरों के बाद आप लिखते हैं कि – "बस बुज़ुर्गो की अर वाह (तसर्रूफ़ की ताक़त) से मदद लेने के हम मुन्कर नही हैं। (सवानयें कासमी)

यही नहीं कि ये लोग सुन्नतुल जमात की तरह तसर्रूफ़ की ताक़त को बाक़ायदा इक़रार ही नहीं करते बल्कि साफ़ तौर पर करामत की तआरीफ़ भी अपने मुंह से यों बयान करते हैं :–

"आदिया–जारिया निज़ामे आलम के ख़िलाफ़ किसी अमर का ज़हूर होना ख़र्क (टुकड़े–टुकड़े) करने की आदत हैं। अगर किसी नबी से सादिर (नाफ़िज़) हो तो मुअज्ज़ह कहते हैं वली से सादिर हो तो "करामात" कहते हैं।

(साहिबें इसतलाहात सूफ़िया के हवाले – इन्केशाफ़ सफ़ा – 27)

नोट :– इसका ख़ुलासा यह हुआ कि निज़ामें हस्ती मे तसर्रूफ़ (बदलाव) का नाम ही करामात है।

★★★

ख़ुलासा

नाज़रीने किराम और क़ारेईने हज़रात! आपने यह किताब – "अक़ीदे की कहानी, देवबन्दी की ज़बानी" को अव्वल से आख़िर तक पढ़ा – समझा और देखा भाला। मुझे क़वी उम्मीद है कि आप इसका बग़ौर मुताअला और अच्छा ख़ासा मुलाहिज़ा भी किये होगें। यक़ीनन आप इसमें देखे होंगे कि – अशरफ़ अली थानवी, रशीद अहमद गंगोही, इलयास और दिगर तबलीग़े जमात के रहनुमा के किरदार, फ़तवे और अक़ायेद में साफ़ तौर पर रसूल दुश्मनी की बात झलकती है। इनके बुरे ख़्यालात और धोखेबाजी उजागर होती है। इनकी दो रूखी बातें, मकरऔर जालसाज़ी ही दिखाई देती है।

यही नहीं, बल्कि इस हक़ीकत और सच्चाई का भी पता चल जाता है कि – तक़्वीयतुल ईमान, तज़कतुर्रशीद, सिराते मुस्तक़ीम, फतवा रशीदिया या ऐसी ही दूसरी किताबों में इस्लामी (सुन्नी) मज़हब के ख़िलाफ जो ग़ैबदानी और तसर्रुफ़ के अक़ीदे का बयान हुआ है उसके बरअक्स उन्हीं के मसलक की नुक़्तयें नज़र में यानी देवबन्दी उल्मा की ज़ुबान में वे सब अक़ायेद सुन्नतुल जमात के ऐन मुताबिक़ ही है। अब कोई भी बात कहने को नहीं रह जाती। इन्कार की अब कोई गुंजाइश नहीं है।

लिहाज़ा! ईमानदारी और हक़ परस्ती के साथ आम मुसलमानों को चाहिये कि तबलीग़ी जमाअत, देवबंदी और वहाबी मज़हब के फ़रेब और मक्कारी से बचकर उनसे क़तअ तआल्लुक करके पूरी तरह से सुन्नी अक़ीदे के पैरोकार बन जायें। मज़बूती से इसके ही दामन को थामे रहें ताकि दुनियावी फ़लाह के साथ आख़िरत की भी कामयाबी और कामरानी हासिल हो जाये।

तारीख़ –

नाचीज़ बन्दा
अल्हाज – मु0 मोईन आज़मी
आरा – बलरामपुर
सरगुजा (छत्तीसगढ़)

एक गुज़ारिश

क़ारेईने किराम! आपने अगर इस किताब को बग़ौर पढ़ा होगा तो मैं समझता हूँ कि बहुत हद तक आप देवबंदी और वहाबी फ़िरक़े के अक़ायेद, ख़्यालात और नज़रिये को जान गये होंगे।

लेकिन..................फिर भी अगर आपके दिल व दिमाग़ में इस बाबत कोई बात रह गई हो या कोई कसर बाक़ी हो तो आपसे गुज़ारिश है कि इसी "अक़ीदे की कहानी देवबंदी की ज़बानी" के तर्ज पर मेरी दूसरी किताब (तस्नीफ़) – " अक़ायेदे हक़" का आप ज़रूर से ज़रूर मुताअला करें।

मुझे क़वी उम्मीद है कि यह किताब – "अक़ायेदे हक़" पूरी तरह से न सिर्फ़ सुन्नी साहेबान बल्कि ग़ैरों को भी सही अक़ीदे की तरफ़ ले जायेगी। उनकी आँखो पर से पर्दा उठा देगी। उनके भीतर का जाला साफ़ कर देगी। साथ ही अगर रब्बे क़रीम का कहीं करम हुआ तो सबके सब यानी देवबन्दी हज़रात भी सिराते मुस्तक़ीम पर गामज़न हो जायेंगे। अन्धेरे से उजाले की तरफ़ लौट आयेंगे।

नाचीज़ बन्दा
मु0 मोईन आज़मी

★★★

तस्नीफ़ात

नाचीज़ बन्दा के तस्नीफ़ात (किताबें) जो मंजरे आम में आ चुकी हैं दर्जे ज़ैल हैं। बराए करम इन सबका भी आप ज़रूर मुताअ़ला करें!

(1) दरबारए मय्यत

(2) अज़मते औलिया

(3) आफ़ताबे छत्तीसगढ़

(4) पर्दा क्या और क्यों?

(5) कुरआन की बातें

(6) तख़्ते फ़िरदौस

(7) इस्लाम के पाँच स्तंभ

(8) उर्दू ज्ञानदीप

(9) अक़ायेदे हक़

(10) अहवाले मक्का मुकर्रमा

(11) अक़ीदे की कहानी देवबन्दी की ज़बानी
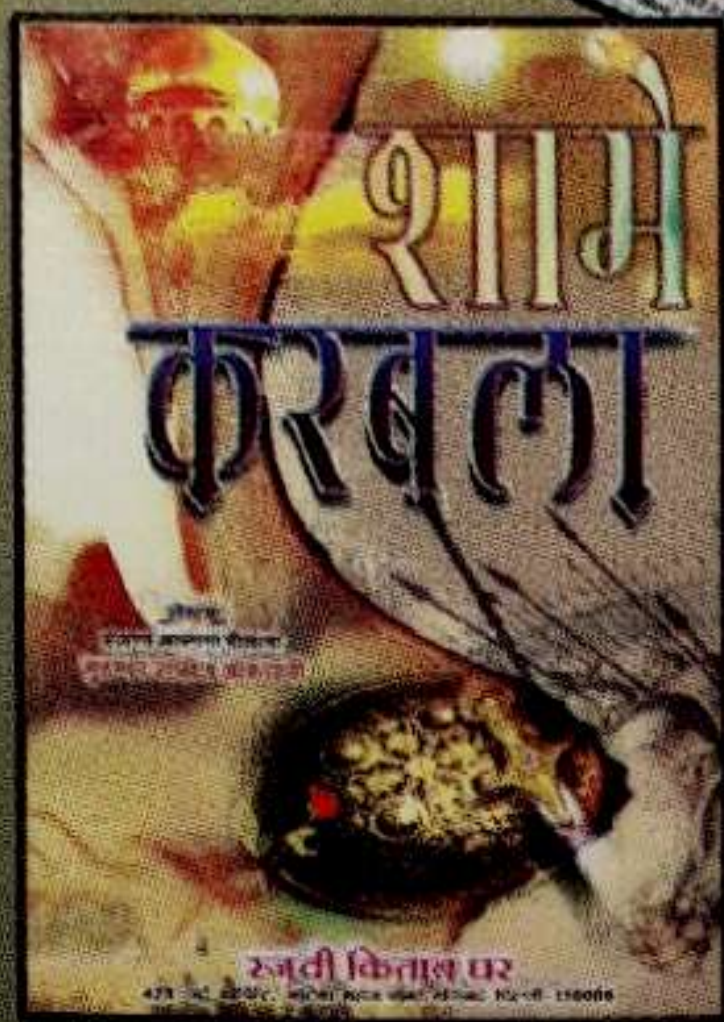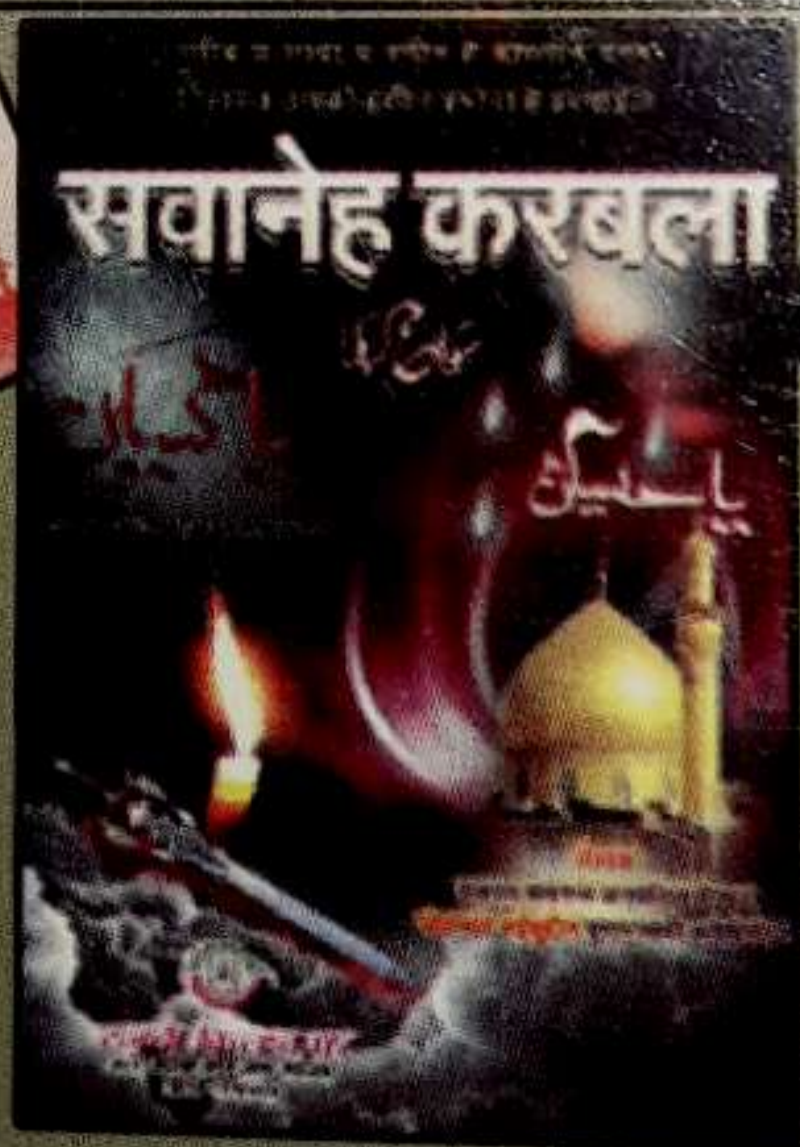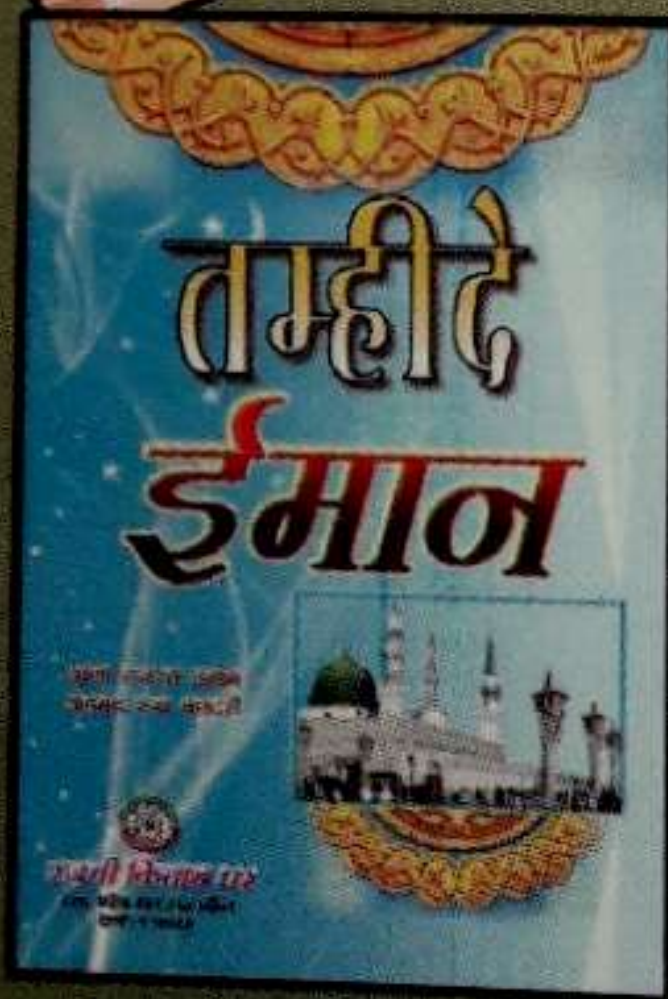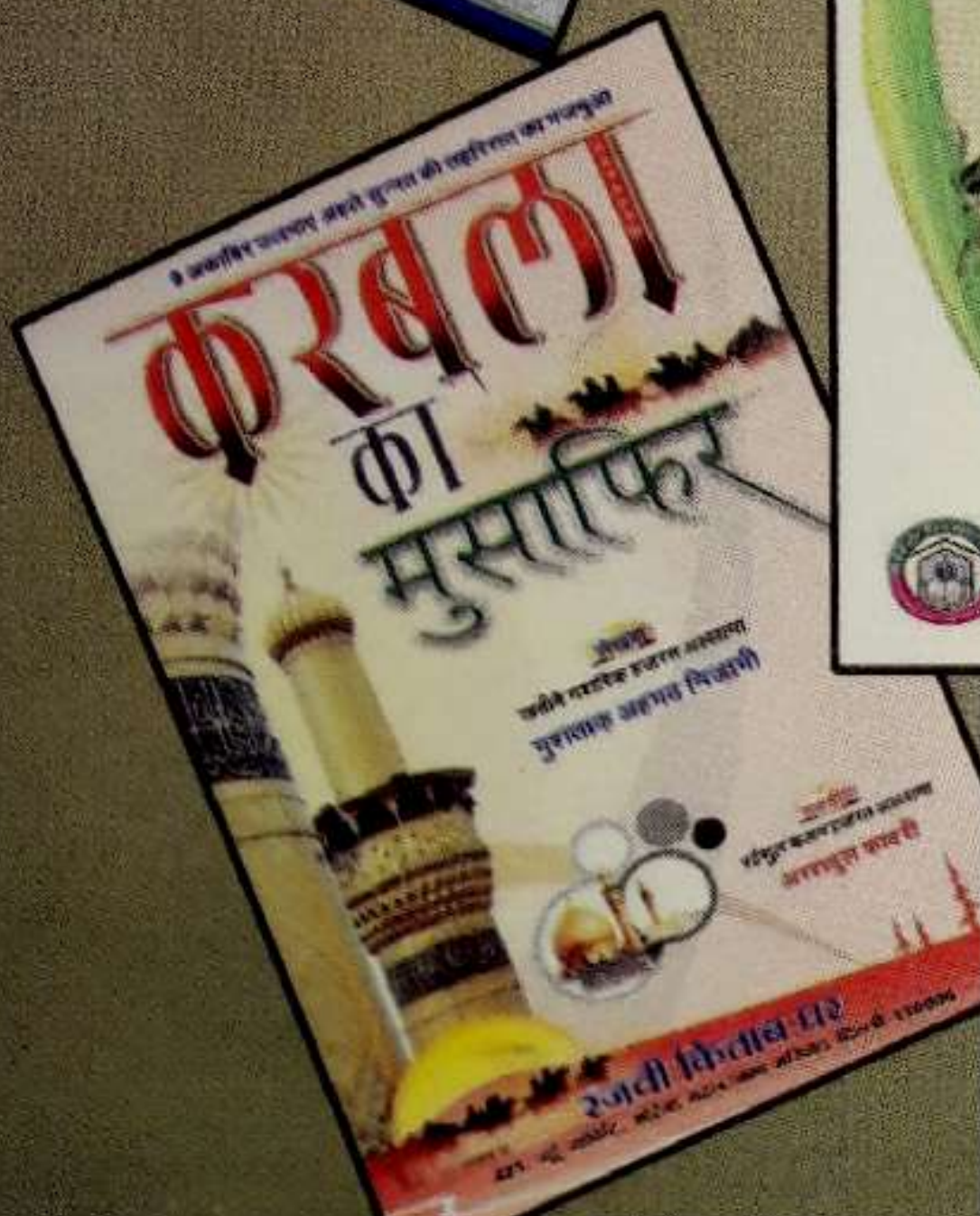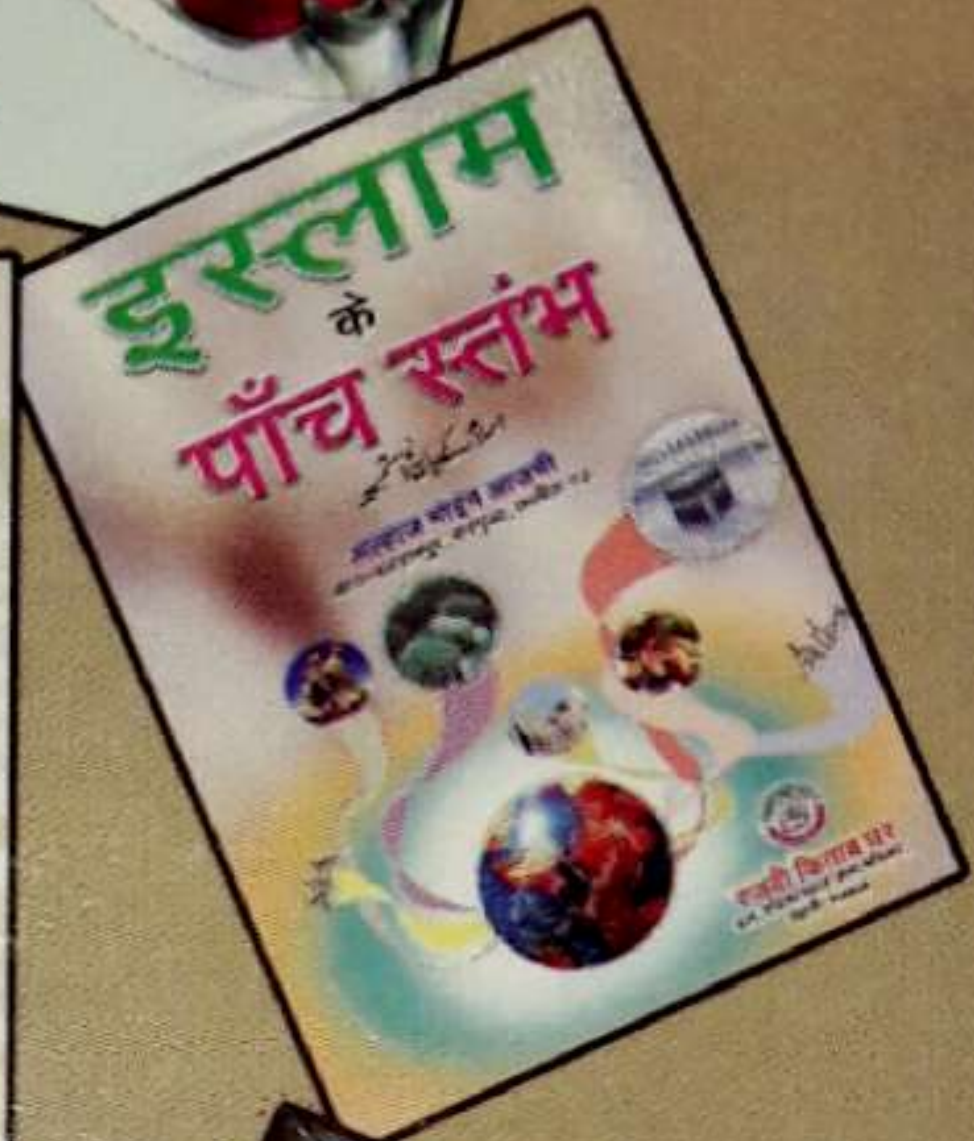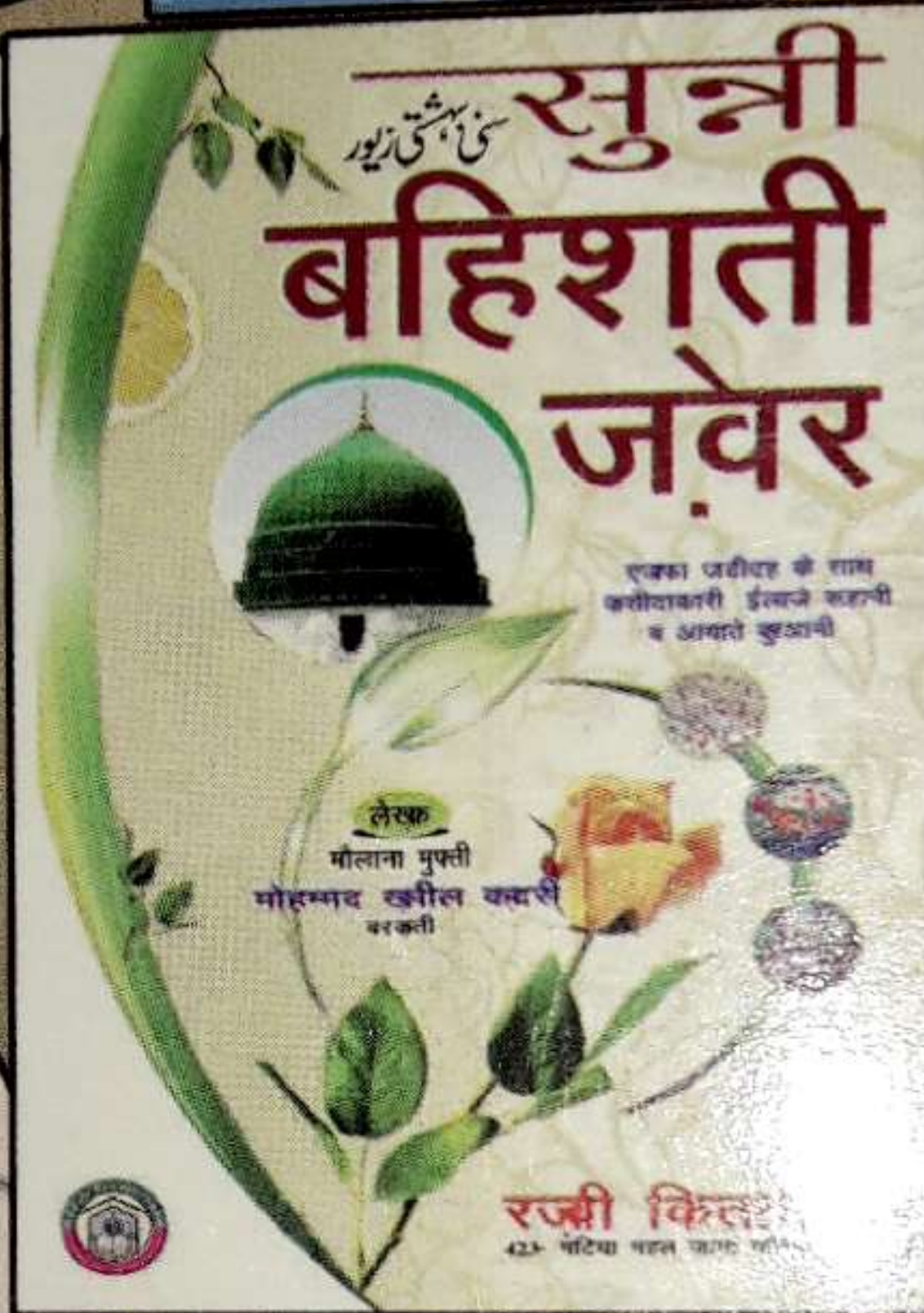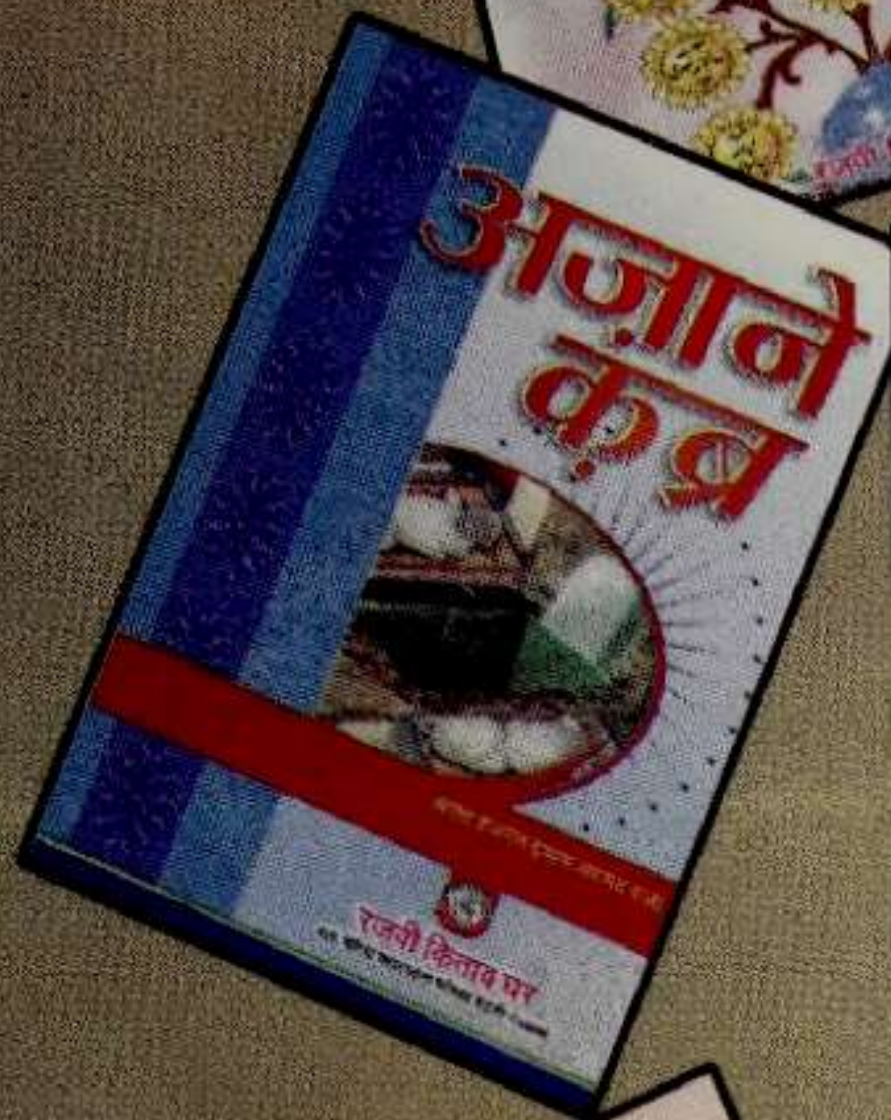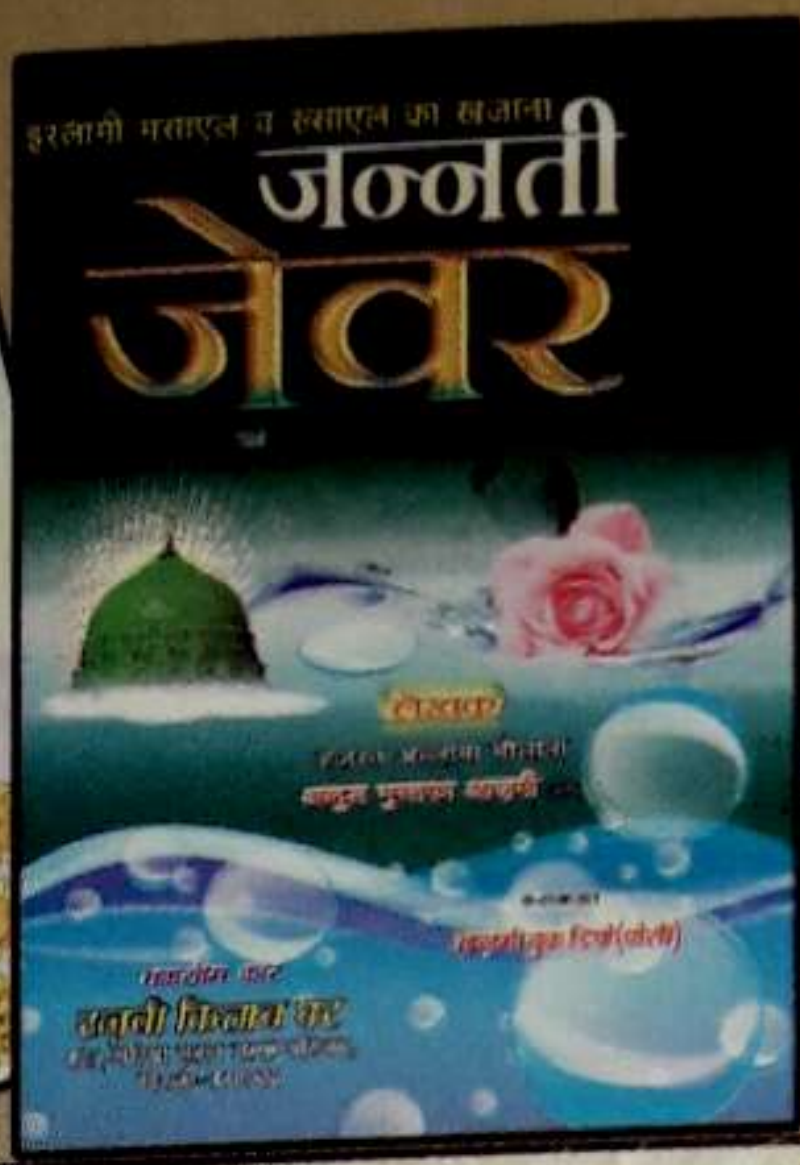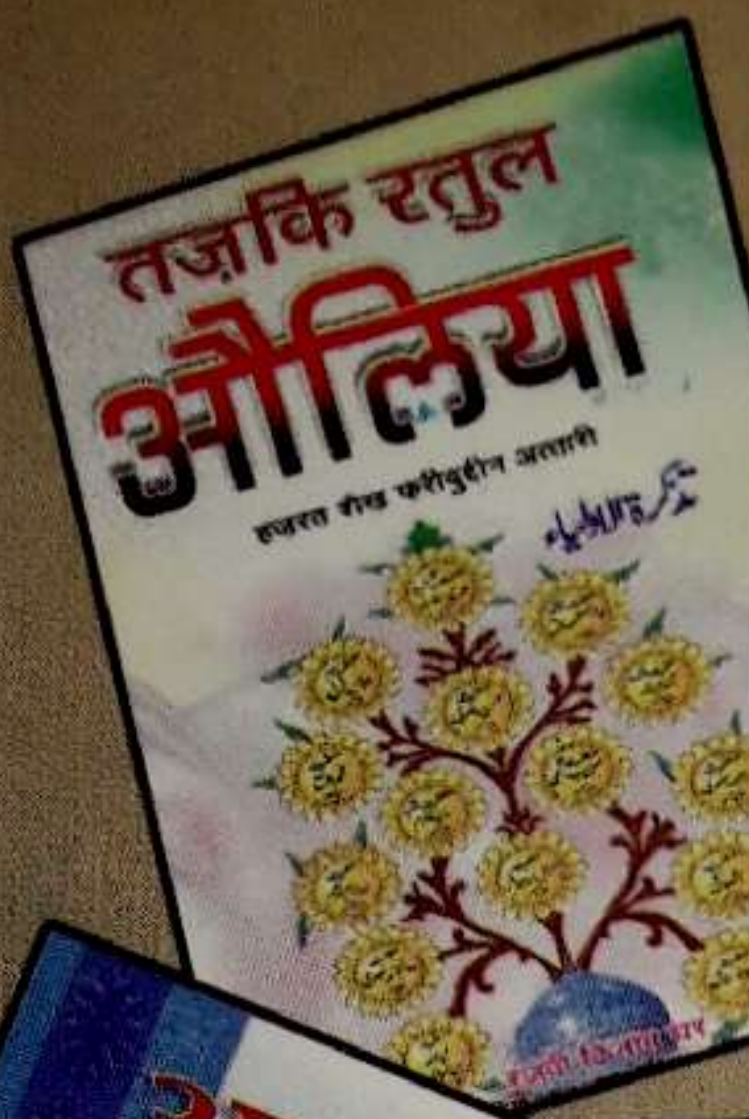
RAZAVI KITAB GHAR
423, Matia Mahal Jama Masjid Delhi-6
Contact:. 9350505879,011-23264524